डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-aadhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

PG-5

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

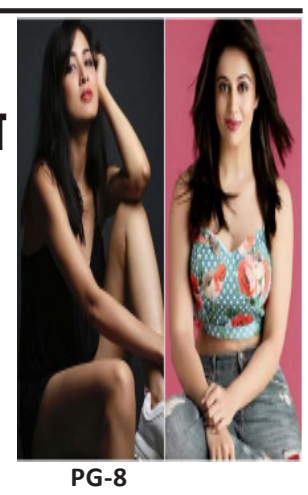

PG-8

सिनेमाःअनीता भाभी बनीं ये एक्ट्रेस बोल्ड तस्वीरों से मचा चुकीं है बवाल

वर्ष -07 अंक -350 प्रयागराज, शनिवार 26 फरवारी, 2022 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

'डिफेंस-काल टू एक्शन में आत्मनिर्भरता पीएम मोदी बजट के बाद के वेबिनार को आज करेंगे संबोधित

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज बजट के बाद के वेबिनार 'डिफेंस-कॉल टू एक्शन' में उद्घाटन भाषण देंगे। रक्षा मंत्रालय ने इसकी जानकारी दी है। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि केंद्रीय बजट 2022-23 ने रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता को और गति दी है। मंत्रालय ने कहा कि वेबिनार का उद्देश्य रक्षा क्षेत्र में सरकार की विभिन्न पहलों को आगे बढ़ाने में सभी हितधारकों को शामिल करना है। वेबिनार का आयोजन आज सुबह साढ़े 10 बजे शुरू होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उद्घाटन भाषण देंगे। वहीं, रक्षामंत्री राजनाथ सिंह समापन भाषण देंगे।

शिमोगा में शुक्रवार सुबह तक 144 लागू मंत्री ने कहा- सुनियोजित थी बजरंग दल कार्यकर्ता की हत्या : मंत्री

शिमोगा। कर्नाटक के गृह मंत्री अरागा ज्ञानेंद्र ने गुरुवार को कहा कि शिमोगा में बजरंग दल कार्यकर्ता की हत्या सुनियोजित तरीके से की गई थी। इस मामले में गिरफ्तार किए गए आरोपितों का आपराधिक इतिहास रहा है। पूर्वी रेंज के महानिरीक्षक त्यागराजन, संयुक्त पुलिस आयुक्त (अपराध) रमन गुप्ता के साथ बैठक की अध्यक्षता करने के बाद ज्ञानेंद्र ने कहा, आरोपितों ने लंबे समय से साजिश रच रखी थी। यह एक सुनियोजित हत्या है। गिरफ्तार किए गए लोगों पर आपराधिक मामले थे और वे आदतन अपराधी हैं।

सुबह तेज धमाकों से दहली यूक्रेन की राजधानी कीव यूक्रेन का दावा- मार गिराए रूस के दो और एयरक्राफ्ट

कीव। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेन्सकी ने यूक्रेन में रूस के साथ शुरू हुए जंग में पहले दिन 137 लोगों के मारे जाने की पुष्टि की और यह भी बताया कि राजधानी कीव से कुछ ही दूर पर स्थित चेनीबिल न्यूक्लियर साइट भी अब मास्को के नियंत्रण में चला गया है। उल्लेखनीय है कि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सबसे बड़ी सैन्य कार्रवाई के तहत यूक्रेन में रूस ने तीन तरफ से हमला बोल दिया है जिससे यहां की सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। इस बीच यूक्रेन ने गुरुवार को संयुक्त राष्ट्र से तत्काल मानवाधिकार परिषद की बैठक बुलाने की मांग की है। वहीं फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने रूस के राष्ट्रपति व्लादीमिर पुतिन से यूक्रेन में सैन्य कार्रवाई को तुरंत रोक देने को कहा है। बता दें कि यूक्रेन पर रूसी हमले के खिलाफ मसौदे पर शुक्रवार को में वोटिंग होगी। वहीं नाटो भी इमरजेंसी समिट आयोजित करेगा। अप्रैल, 1986 को चेनीबिल परमाणु संयंत्र में दुनिया की सबसे भीषण परमाणु दुर्घटना हुई थी। इसमें विस्फोट के बाद पूरे यूरोप में रेडिएशन हुआ था। यह संयंत्र देश की राजधानी कीव के उत्तर में 130 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। जिस रिएक्टर में विस्फोट हुआ था, उसमें से विकिरण रिसाव रोकने के लिए उसे एक सुरक्षात्मक उपकरण से कवर किया गया है और पूरे संयंत्र को निष्क्रिय कर दिया गया है। यूक्रेन के दक्षिण-पूर्वी बॉर्डर पोस्ट पर रूसी मिसाइल आकर गिरी है. इसमें वहां मौजूद सैनिकों को नुकसान पहुंचाया है। यूक्रेन के गृह मंत्री एंटोन जर्सेको ने बताया है कि कीव में सुबह से कुल छह धमाके हो चुके हैं। उनके मुताबिक, ये धमाके क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों से किए गए। आगे कहा गया है कि कार्रवाई करते हुए रूस का एक विमान भी गिराया गया है। कीव में हालात आज सुबह से ही बिगड़े हुए हैं। वहां दो धमाके

सुनाई दिए हैं। इसके साथ-साथ यूक्रेन ने दावा किया है कि उन्होंने दो रूसी एयरक्राफ्ट को वहां मार गिराया गया है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन कुछ देर में नाटो सदस्यों संग वर्चुअल मीटिंग करेंगे। बता दें कि इससे पहले बाइडेन ने अपने संबोधन में कहा था कि यूक्रेन को अपनी लड़ाई खुद लड़नी होगी और अमेरिका वहां अपनी सेना नहीं भेजेगा। अमेरिका ने कहा था कि उसके प्रतिबंध रूस को वैश्विक वित्तीय प्रणाली से अलग कर देंगे। यूरोपियन यूनियन ने रूस पर नए प्रतिबंधों का ऐलान कर दिया है। इसका असर बैंकिंग सेक्टर, राज्य के स्वामित्व वाली कंपनियां, ऑयल रिफाइनिंग इंडस्ट्री और प्रौद्योगिकी निर्यात पर 70 फीसद तक पड़ेगा। रूस के डिप्लोमेट और बिजनेसमैन को अब इन्यू वीजा नहीं मिलेगा। समाचार एजेंसी एएफपी के मुताबिक यूक्रेन की राजधानी कीव सुबह-सुबह तेज धमाकों से दहल गई है। कीव में शुक्रवार सुबह दो जोरदार धमाकों की आवाज सुनी गई। यूक्रेन के गृह मंत्रालय के सलाहकार एंटोन हेराशचेंको ने टेलीग्राम पर कहा कि कीव पर क्रूज और बैलिस्टिक मिसाइलों से हमले अभी फिर से शुरू हुए हैं। मैंने दो शक्तिशाली विस्फोटों की आवाज सुनी। इसके अलावा यूक्रेन के शहर कोनोटोप को भी रूसी सैनिकों ने घेर लिया है। इसके अलावा बाकी फोर्स कीव की तरफ बढ़ रही है। वहीं यूक्रेन का दावा है कि उसने रूस को काफी नुकसान पहुंचाया है। यूक्रेन की रक्षा मंत्री हन्न मालयार के मुताबिक, रूस के 7 एयरक्राफ्ट, 6 हेलिकॉप्टर, 30 टैंक को नष्ट किया गया है। यूक्रेन में चीनी दूतावास ने शुक्रवार को कहा कि पूर्वी यूरोपीय देश में मौजूद सभी चीनी नागरिक स्वदेश वापसी के लिए चार्टर्ड फ्लाइट के लिए रजिस्ट्रेशन करा लें। यह नोटिस दूतावास के आधिकारिक वीचैट अकाउंट पर पोस्ट किया गया। इसमें यह बताया गया कि इसके लिए 27 फरवरी तक रजिस्ट्रेशन हो सकता है। यूक्रेन में कुल 6000 चीनी नागरिक हैं। यूक्रेन से लोगों का पलायन जारी है। इस क्रम में जान बचाकर यूक्रेनी जनता पोलैंड, हंगरी, रोमानिया समेत अन्य पड़ोसी देश पहुंचने लगे हैं। यूएन का अनुमान है कि एक लाख से अधिक लोग यूक्रेन छोड़कर दूसरे देशों में चले गए हैं। इस हमले के एवज में रूस को अब भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। कनाडा ने गुरुवार को 58 रूसी व्यक्तियों और संस्थाओं पर प्रतिबंध लगा दिया। वहीं आज ही अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने भी यूक्रेन में रूस द्वारा मचाई गई तबाही को लेकर इसपर कड़े प्रतिबंधों का ऐलान कर दिया। इसके अलावा जी-7 देश रूस के खिलाफ प्रतिबंधों के विनाशकारी पैकेजों और अन्य आर्थिक उपायों पर आगे बढ़ने और पर सहमत हो गए हैं। जी-7 में कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोपीय यूनियन शामिल है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में सबसे बड़ी सैन्य कार्रवाई अब यूक्रेन में रूस कर रहा है। जमीनी, हवाई और समुद्री रास्ते से भीषण बमबारी से यूक्रेन की हवाई सुरक्षा व्यवस्था तबाह हो गई है। 74 सैन्य ठिकाने और 11 एयरबेस नष्ट हो गए। हालांकि रूस ने यूक्रेन के पांच रूसी विमान और कई टैंक ध्वस्त करने के दावे नकार दिया है। रूसी सेना का चेनीबिल परमाणु संयंत्र पर कब्जा हो गया है। रूसी हमले का शुरुआती निशाना यूक्रेन के सैन्य ठिकाने बने। चंद घंटों में ही यूक्रेन के 74 सैन्य ठिकानों और 11 एयरबेस को रूसी हवाई हमलों ने ध्वस्त कर दिया। इस दौरान राजधानी कीव पर मिसाइलों के हमले हुए और सीमावर्ती शहरों में लड़ाकू विमानों के हमले। देर रात तक हमले जारी रहे। यूक्रेन ने छह हमलावर विमानों और हेलीकाप्टरों को मार गिराने का दावा किया है, लेकिन रूस ने इस दावे को नकार दिया है। यूक्रेन ने रूसी हमले में 40 लोगों के मारे जाने और सैकड़ों के घायल होने की पुष्टि की है। कीव की ओर बढ़ रही रूसी सेना ने चर्चित चेनीबिल परमाणु संयंत्र पर कब्जा कर लिया है। रूस ने विद्रोहियों के कब्जे वाले डोनबास, बेलारूस और काला सागर से यूक्रेन पर हमला किया है। अमेरिकी राजनयिक के रूसी निष्कासन के बदले वाशिंगटन में रूस के दूसरे क्रम के राजनयिक को निष्कासित कर दिया गया। इस निष्कासन का यूक्रेन पर रूसी हमले से संबंध नहीं है। यह कार्रवाई दूतावास के कर्मचारियों पर वाशिंगटन और मास्को के बीच लंबे समय से चल रहे आ रहे विवाद का हिस्सा है। इस बारे में विदेश विभाग ने बुधवार को रूसी दूतावास को सूचित किया था कि वह मंत्री काउंसलर सर्गेई ट्रेपेलकोव को निष्कासित कर रहा है। जो वर्तमान में राजदूत अनातोली एंटोनोव के तहत मिशन में नंबर दो हैं।

यूक्रेन में फंसे हजारों भारतीयों को यूं स्वदेश लाएगी मोदी सरकार

नई दिल्ली। रूस के यूक्रेन पर हमले के बाद वहां रह रहे भारतीयों पर मुसीबत आ गई है। यूक्रेन में पढ़ाई के लिए गए हजारों भारतीय छात्र भी युद्ध के बाद वहां फंस गए हैं। विदेश मंत्रालय भारतीय नागरिकों को स्वदेश सकुशल वापस लाने के लिए तमाम कोशिशें भी कर रहा है। यूक्रेन गई भारतीय फ्लाइट को गुरुवार

को बैरंग वापस लौटना पड़ा था। ऐसे में भारत सरकार नागरिकों को वापस लाने के लिए नए प्लान पर काम कर रही है। दरअसल, यूक्रेन पर रूस के हमले के बाद वहां पढ़ाई कर रहे भारतीय छात्र और नौकरी कर रहे भारतीयों को निकालना भारत सरकार के लिए फिलहाल सबसे बड़ी चुनौती भी है और सबसे बड़ी प्राथमिकता भी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वयं अपने कैबिनेट सहयोगियों को निर्देश दिया है कि यूक्रेन में फंसे भारतीयों को सकुशल स्वदेश लाना पहली प्राथमिकता हो। रूस के हमले की वजह से राजधानी कीव के हवाई अड्डे का संचालन ठप हो चुका है, इसकी वजह से विशेष विमान भेजकर भारतीय विद्यार्थियों को निकालने की योजना प्रभावित हुई है। भारतीय विद्यार्थियों को लाने के लिए भेजे गए एक विमान को बैरंग वापस आना पड़ा। ऐसे में भारत यूक्रेन की पश्चिमी सीमा से सटे दूसरे देशों के जमीनी रास्ते से विद्यार्थियों को वापस निकालने में जुट गया है। विदेश सचिव हर्ष श्रृंगला ने आश्वस्त करते हुए कहा कि यूक्रेन में फंसे सभी भारतीयों को सुरक्षित वापस लाया जाएगा। उन्होंने बताया कि यूक्रेन से सटे चार देशों पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया और हंगरी के रास्ते भारतीय विद्यार्थियों और दूसरे नागरिकों को निकालने पर काम शुरू हो गया है। इन देशों से अलग अलग 10 भारतीय राजनयिकों की टीम यूक्रेन के लिए रवाना हो चुकी है। हंगरी स्थित भारतीय दूतावास कर्मियों का एक दल इस उद्देश्य से यूक्रेन की सीमा से सटे जोहांवी नाम की जगह पर भेजा गया है। पोलैंड व रोमानिया की यूक्रेन से लगी सीमा पर भी भारतीय नागरिकों की सुविधा के लिए केंद्र बनाया जा रहा है। जबकि यूक्रेन की सीमा के भीतर भी दो सेवा केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं ताकि जो नागरिक इन पड़ोसी देशों के जरिये बाहर जाना चाहते हैं, उन्हें सुविधा हो। यूक्रेन में तकरीबन 20 हजार भारतीय नागरिक और विद्यार्थी थे जिनमें से चार हजार पिछले 10 दिनों में वहां से निकल चुके हैं।

घर में ही घिरा रूस यूक्रेन पर हमले के खिलाफ कई शहरों में प्रदर्शन, हिरासत में 1700 से ज्यादा लोग

मास्को। यूक्रेन पर हमले के खिलाफ रूस के अंदर ही विरोध के स्वर उठने लगे हैं। रूस की राजधानी मास्को समेत कई शहरों में लोग यूक्रेन पर युद्ध के खिलाफ

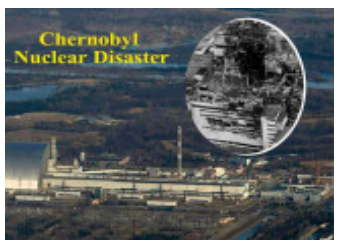

प्रदर्शन कर रहे हैं। बता दें कि रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार सुबह यूक्रेन पर युद्ध का एलान किया था। रूस की पुलिस ने दर्जनों शहरों में प्रदर्शन कर रहे 1700 से ज्यादा लोगों को हिरासत में ले लिया है। मास्को टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार, दक्षिणी शहर तोल्याट्टी से दूर पूर्वी शहर खाबरोवस्क तक भी प्रदर्शन हुए। इसके अलावा राजधानी मास्को और सेंट पीटर्सबर्ग में भी प्रदर्शन हुए। मास्को में ही 100 लोगों को हिरासत में लिया जा चुका है। सामाजिक कार्यकर्ता मरीना ने गुरुवार को रूसियों से यूक्रेन में रूसी सैन्य अभियान के खिलाफ मार्च में हिस्सा लेने की अपील की। उधर, रूस में प्रदर्शनकारियों को चेतावनी दी गई है। रूसी सुरक्षाबलों ने कहा कि किसी भी तरह की अनाधिकृत सभाएं अवैध हैं। किसी भी तरह की सभा करने की मंजूरी नहीं है। रूस के हमले के खिलाफ अमेरिका में भी प्रदर्शन हो रहे हैं। व्हाइट हाउस के बाहर सैकड़ों लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया है। रूस के दूतावास के बाहर भी लोगों ने प्रदर्शन किया है। रूस के हमले में यूक्रेन में अब तक 137 लोगों की मौत हो चुकी है।

राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की आज तीसरी वर्षगांठ नौसेना प्रमुख और वायुसेना प्रमुख ने दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। देश आज राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की तीसरी वर्षगांठ मना रहा है। इस अवसर पर आज नौसेना प्रमुख एडमिरल आर.हरि कुमार और वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वी.आर.चौधरी ने राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस दौरान रक्षा सचिव अजय कुमार ने भी राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर जाकर श्रद्धांजलि दी। बता दें कि स्वतंत्रता के बाद से वीर सैनिकों के बलिदान के प्रमाण के रूप में 25 फरवरी, 2019 को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक को राष्ट्र को समर्पित किया गया था। आज राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की तीसरी वर्षगांठ पर सीबीएसई ने शिक्षा मंत्रालय और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के परामर्श से स्कूल बैंड का एक खास कार्यक्रम तैयार किया है। इसके तहत स्कूल बैंड रोटेशन के आधार पर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर अपनी कला का प्रदर्शन करेंगे। गौरतलब है कि रक्षा मंत्रालय ने शिक्षा मंत्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में स्कूल बैंड के कला प्रदर्शन का निर्णय लिया है। इस पहल का उद्देश्य बच्चों में देशभक्ति, कर्तव्य के प्रति समर्पण और बलिदान की भावना को बढ़ाना है ताकि उन्हें इस प्रतिष्ठित युद्ध स्मारक से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अनुभव हो सके। बता दें कि राष्ट्रीय युद्ध स्मारक या नेशनल वार मेमोरियल इंडिया गेट के दूसरी ओर केवल 400 मीटर की दूरी पर स्थित है। प्रधानमंत्री मोदी ने वर्ष 2019 में 25 फरवरी को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का उद्घाटन किया था। यहां 25,942 सैनिकों के नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखे गए हैं

डूरंड रेखा विवादः तालिबान और पाकिस्तानी सेना के बीच छिड़ी लड़ाई, तीन नागरिकों की हुई मौत, 20 घायल

इस्लामाबाद। कंधार के स्पिन बोल्डक जिले में डूरंड रेखा पर तालिबानी और पाकिस्तानी सेना के बीच लड़ाई शुरू हो गई है। लड़ाई के दौरान गोलीबारी और हाथापाई के चलते 20 लोग घायल हो गए हैं जबकि 3 की मौत हो गई है। स्थानीय मीडिया के अनुसार कल दोपहर से ही डूरंड लाइन पर तालिबान और पाक बलों के बीच कंधार के स्पिन बोल्डक जिले में लड़ाई चल रही है। अब तक 20 नागरिक घायल और तीन मारे गए हैं। डूरंड लाइन के पास नागरिक अपने घरों से भाग गए हैं। कंधार के सूत्रों के अनुसार, पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा स्पिन बोल्डक गेट पर एक अफगान बच्चे को पीटने और उसके बाद अफगान सुरक्षा बलों के पाकिस्तानी सीमा प्रहरियों पर गोलियां चलाने पर यह लड़ाई शुरू हुई है। घटना गुरुवार दोपहर की है, जिसके बाद गेट को यातायात के लिए बंद कर दिया गया। घटना

के बाद, अल-बद्र कोर से सेना के बल घटनास्थल पर पहुंच चुके हैं और पाकिस्तानी सीमा प्रहरियों को जवाब देने की तैयारी कर रहे हैं। बता दें कि डूरंड रेखा के मुद्दे पर तालिबान और पाकिस्तान के बीच मतभेद अभी भी जारी है। गौरतलब है कि इस संदर्भ में जलालाबाद (नंगरहार प्रांत) में पाकिस्तान के वाणिज्य दूतावास ने पिछले दिनों में खोस्त-उत्तर वजीरिस्तान क्षेत्र में गुलाम खान सीमा पार की स्थिति को पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय को बताया था। उन्होंने बताया था कि तालिबान ने पाकिस्तान को वहा से हटा दिया था। स्थानीय मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, एक सीमा चौकी से पाकिस्तानी झंडा और जीरो लाइन पर हुमवे और सशस्त्र कर्मियों को तैनात किया गया था। जवाब में, पाकिस्तान ने तालिबान को संभावित जवाबी कार्रवाई की चेतावनी जारी की और व्यापार कुछ दिनों के लिए निलंबित कर दिया गया था। लेकिन बाद में दोनों पक्षों के व्यापारियों और आदिवासी बुजुर्गों के हस्तक्षेप से इस मुद्दे को सुलझा लिया गया था। इनी सेना द्वारा डूरंड लाइन पर की गई बाड़बंदी के कुछ हिस्सों को भी कुछ दिनों पहले क्षतिग्रस्त कर दिया था। बता दें कि इससे पहले भी तालिबान ने पाकिस्तानी सेना को डूरंड लाइन (दोनों देशों की सीमा रेखा) के करीब नांगरहार प्रांत में बाड़बंदी व सैन्य चौकियों के निर्माण से रोका था।

लगातार दूसरे दिन 15 हजार से कम आए कोरोना के मामले, 27 हजार हुए रिकवर

नई दिल्ली। देश में कोरोना के मामलों में गिरावट अभी भी जारी है। लगातार दूसरे दिन कोरोना के नए मामले 15 हजार से कम आए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोरोना को लेकर अपडेट जारी किया है। मंत्रालय की रिपोर्ट के मुताबिक, देश में आज कोरोना के 13,166 नए मामले सामने आए हैं। वहीं, 24 घंटों के दौरान 26,988 लोग ठीक हो गए जबकि 302 की मौत हो गई। कोविन वेबसाइट के मुताबिक, देशभर में अब तक 1,76,79,09,639 कोविड की खुराक दी जा चुकी है। 96,47,24,946 लोगों को वैक्सीन की पहली डोज लग चुकी है। वहीं, 78,46,18,610 दूसरी डोज लग चुकी है। इसके अलावा अब तक 1,85,66,083 प्रीकाशन डोज भी लगाई जा चुकी है।

ITBP को मिले 8 फाइटर पिल्ले, 9 फाइटर मोम जूली ने दिया जन्म

पंचकुला। आईटीबीपी का खोजी कुत्तों का दल 8 'मेलिनोइस 9' पिल्लों के जन्म के बाद और अधिक मजबूत हो गया है। आईटीबीपी अधिकारी के अनुसार 9 फाइटर मोम जूली ने हरियाणा में पंचकुला के पास आईटीबीपी, भानु में एनटीसीडी (नेशनल ट्रेनिंग सेंटर फॉर डॉग्स) में 8 फाइटर पिल्लों को जन्म दिया। बता दें की इनका जन्म प्रोजेक्ट के लिए नेशनल ऑगमेंटेशन में हुआ है। आईटीबीपी इन्हें पैदल गश्त और आतंकवादी-रोधी अभियानों के लिये प्रशिक्षित कर सकती है। आईटीबीपी अधिकारी के अनुसार मेलिनोइस जूली नाटो बलों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली नस्ल की है। बता दें कि ये जानवर आईटीबीपी के जवानों के साथ बेहतर तालमेल बिठाकर चौकसी करते हैं और देश की सुरक्षा

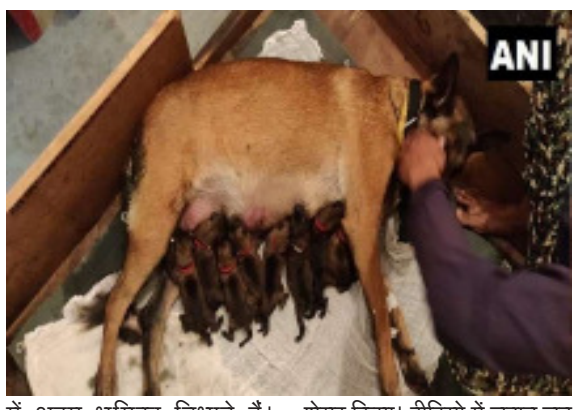

में अहम भूमिका निभाते हैं। गौरतलब है कि आईटीबीपी सर्वश्रेष्ठ कुत्तों को विशेष वार्षिक पदक भी प्रदान करती है। पिल्लों के जन्म के बाद आईटीबीपी ने एक वीडियो भी शेयर किया। वीडियो में जवान जब पिल्लों को 9 फाइटर मोम जूली के पास लेकर जाते हैं तो वह उन्हें बड़े प्यार से चूमने लगती है। इसके बाद जवाव उस पिल्ले को साफ कर फीड करने के लिए छोड़ देते हैं। बता दें कि मेलिनोइस एक छोटा जर्मन शेफर्ड डाग जैसा दिखाई देता है। इसकी ऊंचाई 24 इंच और इसका वजन 55 से 60 पाउंड (24-27 किलोग्राम) होता है। इसके पैर बिल्कुल सीधे होते हैं। मेलिनोइस एक मजबूत कुत्ता है, जो खराब मौसम में भी अच्छे से अपना काम कर सकता है और हर तरह के काम के अनुकूल देखा जाता है। यह एक बेहतर रक्षक कुत्ता भी है, इसमें सबसे ज्यादा बुद्धि देखी जाती है और यह जर्मन शेफर्ड से भी उर्जावान होते हैं।

भाजपा नेता की एजेंसी में लूट का खुलासा, पूर्व कर्मचारी था घटना में शामिल, पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। अतरसुइया थाना क्षेत्र के मीरापुर इलाके में तिकोनिया अंजाम दिया था। पुलिस ने दोनो लुटेरों को मुठभेड़के बाद गिरफ्तार कर लिया है। उनकी निशानदेही पर कब्जे से लूट के एक लाख करने के बारे में पता चला। सीसीटीवी फुटेज से मिली बदमाशों की तस्वीर के जरिए हुलिए का मिलान किया गया जिसके बाद

चौराहे के पास व्यापारी और भाजपा नेता नरेश कुंद्रा की एजेंसी में 1.75 लाख की लूट का खुलासा हो गया है। वारदात को एजेंसी के पूर्व कर्मचारी अजय निषाद ने अपने दोस्त रवि पासी संग मिलकर 5,440 रुपए और एक अवैध तमंचा आदि बरामद किया गया है। दोनों को जेल भी भेज दिया गया है। पुलिस को जांच पड़ताल में अजय निषाद को घटना से पांच दिन पहले तक भाजपा नेता की एजेंसी में काम उसको और उसके साथी को गिरफ्तार किया गया। भाजपा नेता की एजेंसी में लूट का खुलासा, पूर्व कर्मचारी था घटना में शामिल, पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार किया गया।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतदाता जागरूकता अभियान के तहत पिंक रैली को हरी झण्डी दिखाकर कार्यक्रम का किया शुभारम्भ

(आधुनिक समाचार सेवा)
शकील खान

प्रयागराज । जिला निर्वाचन अधिकारी/जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री ने गुरूवार को शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क में मतदाता जागरूकता अभियान के अन्तर्गत ''पिंक रैली'' को हरी झण्डी दिखाकर प्रारम्भ किया, जिसमें जनपद के कुल 22 ब्लाक की प्रत्येक ब्लाक की 70 शिक्षिकाएं अर्थात कुल लगभग 1200 शिक्षिकाओं ने प्रतिभाग किया। पिक रैली चन्द्रशेखर आजाद पार्क से मदन मोहन मालवीय चैराहा से सिविल लाइन हनुमान मंदिर चैराहा से मेडिकल चैराहा से बालसन चैराहा होते हुए पुनः चन्द्रशेखर आजाद पार्क मूर्ति के पास समाप्त हुआ। पिंक रैली में पिंक रंग की कपड़े पहन कर महिलाओं ने अपने दोपहिया वाहन यातायात के नियमों का पालन करते हुए वोटरों को जागरूक करने के लिए स्लोगनों के माध्यम से लोगो को जागरूक किया। रैली का नेतृत्व सुश्री प्रज्ञा सिंह, खण्ड शिक्षा अधिकारी नगर ने किया। इस अवसर अपर नगर मजिस्टेट्ट प्रथम शुभम श्रीवास्तव, बेसिक शिक्षा अधिकारी श्री प्रवीण

तिवारी तथा स्वीप कार्यक्रम के अनुपम परिहार, अनुरागिनी सिंह, दीपिका, अमरनाथ एवं संगीता सिंह सहित अन्य लोग उपस्थित रहे ।

प्रयागराज में बोले पीएम मोदी परिवारवादियों के हाथ में देश सुरक्षित नहीं

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फाफामऊ में विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए कहा की परिवारवादी आपके पास आकर वोट मांग रहे हैं, वो लोग सशक्त और आधुनिक उत्तर प्रदेश का निर्माण नहीं कर सकते। ये अफवाहवादी हैं, पलायनवादी हैं और ये घोर अंधविश्वासी हैं। उन्होंने कहा प्रयागराज मेधावी युवाओं का संगम है लेकिन परिवारवादियों ने उनसे नौकरी के नाम पर छल किया है। उनके राज में नौकरी के लिए योग्यता की अहमियता नही थी बल्कि जातिवाद, क्षेत्रवाद और नोटों का बंडल ही सब कुछ था। पीएम ने कहा की परिवारवादियों ने होनहार युवाओं की जि़ंदगी बर्बाद कर दी। आज फिर ये नौकरी के नाम पर लोगों को धोखा दिया है। इन्होंने सिर्फ़ 2 लाख लोगों को नौकरी दी जबकी योगीजी की सरकार ने 5 साल में 5 लाख नौजवानों को नौकरी दी। उन्होंने कहा, पहले यूपी में पीसीएस और यूपीएससी का सिलेबस अलग - अलग था लेकिन हमारी सरकार ने छात्रों का दर्द समझा और सिलेबल एक किया ताकी उतनी ही मेहनत से दोनो की तैयारी की जा सके। वह बोले, पहले बड़ी योजना बनने से लेकर छोटी-छोटी ठेकेदारी तक में भाई-भतीजावाद चलता था। उन्होंने कहा कि पूरी पारदर्शिता के साथ योग्य लोगों को काम दिया जा रहा है। यूनेस्को ने कुम्भ के मेले को विश्व विरासत का दर्जा दिया। वह बोले पहले की सरकारों ने यूपी की जनता को धोखा दिया। उन्होंने कहा पहले की सरकारों को प्रयागराज के नाम से नफ़रत है। प्रधानमंत्री ने कहा परिवारवादियों की राजनीति का दायरा संकीर्ण है जबकी भाजपा का विशाल है। उन्होंने कहा विपक्षी दलों ने चौथे चरण से ही ईवीएम को गाली देना शुरू कर दिया है।

बसपा भाजपा छोड़ कई पदाधिकारी सपा में शामिल

(आधुनिक समाचार सेवा)
राकेश मिश्रा

प्रयागराज । बारा विधानसभा में आज श्रीनाथ सत्यनारायण इंटर

कॉलेज जसरा प्रयागराज में समाजवादी प्रत्याशी अजय भारती मुनन और कई सपा पदाधिकारियों के समक्ष ग्राम प्रधान पांडर सुरेंद्र सोनकर भाजपा मंडल अध्यक्ष पद छोड़कर सपा में हुए शामिल वही बहुजन समाज पार्टी के वरिष्ठ नेता रामचन्द्र सोनकर बहुजन समाज पार्टी को छोड़कर अपने साथियों के साथ सपा में हुए शामि इस कार्यक्रम में मौजूद रमेश तिवारी पारुल हसन गुड्डू सिंह दिनेश तिवारी उपेंद्र दुबे अंबिका प्रसाद त्रिपाठी वृपाशंकर,आशीष त्रिपाठी,(गुड्डू),साचेन्द्र द्विवेदी,(हसन)अनूप त्रिपाठी,(पारूल), गिरजा पांडे सुनील दुबे मुकेश तिवारी आदि लोग मौजूद रहे।

मेजा के साइलेंट मतदाता करेंगे प्रत्याशियों का फैसला

(आधुनिक समाचार सेवा)
दिलीप जयसवाल

प्रयागराज। मेजा प्रयागराज मेजा 259 विधानसभा में वोटरों के शांत रहने से किसी की उम्मीदवारी नहीं जताई जा रही है। जबकि भाजपा सरकार आने के बाद लोगों ने समझा था कि जातिवाद की लड़ाई शायद अब कुछ कम हो जाएगी। लेकिन जैसे ही 2022 विधानसभा चुनाव का आगाज हुआ। वैसे ही जाति समीकरण को लेकर लोगों में पार्टी बंदी करना शुरू हो गया। जिससे मेजा क्षेत्र की जनता साइलेंट मोड में दिखाई दे रही है। यह किस पार्टी पर मेहरबान होगी यह कहा नहीं जा सकता। यद्यपि सभी पार्टियां अपने अपने हिसाब से अपना प्रचार प्रसार कर रहे हैं। लेकिन साइलेंट जनता किस तरफ करवट बदलेगी यह किसी प्रत्याशी को प्रत्यक्ष नहीं दिखाई दे रहा है।

कल चार स्थानों से रवाना होंगी पोलिंग पार्टियां

(आधुनिक समाचार सेवा)
विलास गुप्ता

प्रयागराज। 27 फरवरी को प्रयागराज में पांचवें चरण के तहत होने वाले मतदान के लिए शनिवार को चार स्थानों से पोलिंग पार्टियां रवाना होंगी। पोलिंग पार्टियां मोतीलाल नेहरू नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेकनेलॉजी (एमएनएनआईटी) तेलियरगंज, नार्दर्न रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ प्रिंटिंग टेक्नोलॉजी (एनआरआईपीटी) तेलियरगंज, परेड मैदान और केपी इंटर कॉलेज से रवाना की जाएगी। बेसिक शिक्षा अधिकारी ने पार्टियों की रवानगी की स्थिति, उपस्थिति एवं अन्य कार्यो के लिए कम्प्यूटर के जानकार 25 ऑपरेटर, अनुदेशक और एकाउंटेंट की ड्यूटी लगाते हुए शनिवार सुबह 06:30 बजे उपस्थित होने का निर्देश दिया है। इसके अलावा 12 विधानसभा क्षेत्र में पार्टिन्यों को रवाना करने के लिए 614 कार्मिकों की ड्यूटी लगाई है।

रघुराज प्रताप का अखिलेश पर पलटवार- कुंडा में कुंडी लगाने वाला कोई माई का लाल पैदा नहीं हुआ

प्रतापगढ़। यूपी विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के बयान पर जनसत्ता दल लोकतांत्रिक के राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मंत्री रघुराज प्रताप सिंह राजा भैया ने तीखा पटलवार किया है। शुक्रवार को कुंडा विधानसभा के बिहार बाजार में चुनावी सभा में उन्होंने कहा कि कुंडा में कुंडी लगाने वाला अब तक इस धरती पर कोई माई का लाल नहीं पैदा हुआ है। कुंडा को कुंडी बना देने की बात करने वाले सपा सुप्रीमों को गलतफहमी है कि उनकी सरकार बनने जा रही है। वह मुगालते में न रहें। न तो उनकी सरकार बनने जा रही है और न ही वह बनने देंगे समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश ने गुरुवार को कुंडा विधानसभा क्षेत्र के छेऊंगा व सदर के मंदाह में आयोजित जनसभा में राजा भैया का बिना नाम लिए जनता से कहा था कि कुंडा में कुंडी लगा दो।

सचिव ने वृद्धा आश्रम का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़। उ0प्र0 राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के निर्देशानुसार एवं माननीय जनपद न्यायाधी/ अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण संजय शंकर पाण्डेय के निर्देशन में चिलबिला स्थित वृद्धा आश्रम का जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव नीरज कुमार त्रिपाठी द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान सचिव ने वृद्धा आश्रम में उपस्थित वृद्ध व्यक्तियों को उनके अधिकारों सम्बन्धित विधिक जानकारी दी गयी। इस अवसर पर सचिव ने वृद्धा आश्रम में रह रहे वरिष्ठ नागरिकों से उनकी समस्याओं की जानकारी ली और आश्रम के साफ-सफाई का निर्देश सम्बन्धित को दिया। प्रबन्धक को निर्देशित किया गया कि वृद्धा आश्रम में रह रहे वृद्ध व्यक्तियों को जिनकी आयु 60 वर्ष से अधिक है उन्हें कोविड-19 बूस्टर डोज लगवायी जाये। इस अवसर पर सचिव द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करते हुये कहा कि 60 वर्ष से अधिक वर्ष के व्यक्तियों को सरकार द्वारा विभिनन्न योजनाओं से लाभान्वित करने के लिये कानून बनाया गया है। इसका लाभ आप लोगों को लेना चाहिये। माता पिता एवं वरिष्ठ नागरिक का भरण पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007 में दी गयी व्यवस्थाओं के प्रति जागरूक करते हुये कहा कि किसी भी माता पिता या वरिष्ठ नागरिक को कोई समस्या उसके परिजनों द्वारा उत्पनन्न की जाये तो उसकी सीधी शिकायत सम्बन्धित उपजिला मजिस्ट्रेट से करनी चाहिये। पैनल अधिवक्ता विश्वनाथ त्रिपाठी ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा वृद्धों को उनकी समस्याओं के निस्तारण हेतु निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध करायी जाती है। इस अवसर पर बताया गया कि वृद्धा आश्रम में कुल पंजीकृत 75 वृद्ध है जिनमें 50 पुरूष एवं 19 महिलायें है, शेष लोग अपने घर गये है। प्रबन्धक द्वारा बताया गया कि सभी वरिष्ठ नागरिकों को कोविड-19 की दोनो डोज दी जा चुकी है। वृद्धा आश्रम में रह रहे लोगों को देखने के लिये जिला चिकित्सालय से चिकित्सक नियमित रूप से नही आते है। माह दिसम्बर 2021 में आयुर्वेद चिकित्सक आये थे उसके बाद कोई चिकित्सक स्वास्थ्य जांच हेतु नही आये।

रैली मैं जनसैलाब देख गदगद दिखे मुजतबा

(आधुनिक समाचार सेवा)
सरफराज अहमद

फूलपुर। फूलपुर के लंका मैदान में सपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव की रैली में अप्रत्याशित भीड़ से गदगद फूलपुर के सपा प्रत्याशी हाजी मोहम्मद मुजतबा सिद्दीकी ने बताया। कि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए मनोबल ऊंचा रखने का मंत्र दिया। मीडिया के समक्ष राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा मिले सम्मान से गदगद दिखे। मुजतबा सिद्दीकी ने कार्यकर्ताओं से 2 दिन हिम्मत से डटकर पार्टी के पक्ष में मेहनत करने की हिदायत दी। आत्मविश्वास से लबरेज उन्होंने कहा। कि फूलपुर की जनता ने जो प्यार व सम्मान थोड़े समय में मुझे दिया है। उसका मैं कर्जदार रहूंगा और समय आया तो उस कर्ज को उतारने का भरपूर प्रयास करूंगा। मौके पर अतीर्कुर रहमान, सपा जिला अध्यक्ष नसीर उद्दीन राईन, जियाउद्दीन अहमद, परवेज भाई, लाल पति भारतीया, अर्शद उल्ला, शहजादे पहलवान, कुमार मंगल, सै0 सुहैल अहमद अरकान उर रहमान आदि लोग मौजूद रहे।

प्रचार समाप्त होते ही बाहरी विधानसभा क्षेत्र छोड़ दें

(आधुनिक समाचार सेवा)
डॉ0रणजीत सिंह

प्रतापगढ़।जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0नितिन बंसल ने भारत निर्वाचन आयोग के नियम क्रम के निर्देशानुसार उन लोगों को चुनाव प्रचार समाप्त होते ही विधानसभा क्षेत्र छोड़ देने का निर्देश दिया है जो उस विधानसभा क्षेत्र के निवासी नहीं हैं। विधानसभा सामान्य निर्वाचन अधिसूचनानुसार पंचम चरण में जनपद प्रतापगढ़ में दिनांकः 27 फरवरी को मतदान सम्पनन्न होना है।भारत निर्वाचन आयोग के आदेशानुसार सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि विधानसभा सामान्य निर्वाचन-2022 को सकुशल, शांतिपूर्ण, शुचिता व निष्पक्षता से सम्पादित कराये जाने के दृष्टिगत मतदान समाप्ति के 48 घंटे पूर्व जो प्रतिबन्ध लागू है उसके तहत सभी राजनीतिक पदाधिकारी/दल पदाधिकारी जो प्रचार के लिये जनपद के विधानसभा क्षेत्रों में बाहर से आये है और जो मतदाता नहीं हैं, प्रचार समाप्त होने के तत्काल बाद निर्वाचन क्षेत्र से चले जायें।इसका कड़ाई से अनुपालन किया जायेगा अन्यथा की स्थिति में विधिक कार्यवाही की जायेगी।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते हैं तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 28 फरवरी 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

किसानों कि जब तक मांगे पूरी नहीं होगी तब तक धरना प्रदर्शन चलता रहेगा किसान मोर्चा अशोक प्रजापति

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी) ।बरियासनपुर में रिंग रोड फ्रेश दो पर अंडरपास बनाने की मांग को लेकर किसानों ने आज बृजेश कुमार पटेल(अंतरराष्ट्रीय कोच खेल विभाग)व महिला किसान नेत्रीअहिल्या पटेल के संयुक्त नेतृत्व में रिंग रोड फेज2का काम रोका मौके पर पहुंचे एनएचएआई के अधिकारियों से वार्ता करते हुए बृजेश कुमार पटेल ने कहा कि जब तक अंडर पास नहीं बन जाता है तब तक हम लोग कार्य को नहीं करने देंगे । 72 वां दिन से अंडरपास की मांग लेकर किसानों ने एनएचएआई के पी .डी और जिला प्रशासन बार-बार वादा करने के बाद भी यहां पर अंडर पास नहीं बनाए। इसलिए आज किसानों को काम रोकना पड़ा और तब तक कार्य रोकेंगे जब तक अंडरपास नहीं बन जाता है जरूरत पड़ी तो हम

लोग भूख हड़ताल जारी करेंगे अर्धनगन प्रदर्शन करेंगे चक्का जाम करेंगे और माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी का 27 को वाराणसी आगमन है यदि हमारी मांगे पूरी नहीं होती है किसान उनका विरोध करेंगे। लक्ष्मी नारायण पटेल लालजी, पटेल श्याम जी, राम किशुन, राकेश पटेल ,अजय मौर्या, प्रेमलता पटेल, अहिल्या पटेल, निर्मला पटेल, उर्मिला देवी ,धनरादेवी, शीला पटेल , गीता पटेल ,पूजा देवी ,सविता पटेल ,सरिता पटेल, इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

क्षय रोगियों का होगा बेहतर उपचार चिकित्सा प्रभारी आरके सिंह

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी) । विकासखंड के हरहुआ प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र द्वारा क्षय रोग से ब्लॉक को मुक्त करने के लिए समस्त स्टाफ की बैठक शुक्रवार को हुई। जिसमें चिकित्सा अधिकारी, एसटीएस एसडीएलस और लैब टेकनीशियन शामिल रहे।प्रभारी चिकित्सा अधिकारी हरहुआ डॉ0 आर 0के0 सिंह द्वारा निर्देश जारी कर हर ग्राम पंचायतों में ऐसे मरीज की खोजवीन करें जिसको एक हफ्ते से ज्यादा खांसी ,बलगम से पीड़ित हों।साथ ही कुपोषित बच्चों को चिन्हित करके उनका बलगम जांच एक्सरे कराना सुनिश्चित करें।ताकि सभी एक्यूट मरीजों को तात्कालिक उपचार शुरू कर निःशुल्क दवाएं दी जा सके।इस राष्ट्रीय अभियान में समन्वयन से ही लक्ष्य को पूरा किया जा सकेगा।

इसमें पीएचसी से लगायत ग्राम स्तर के कार्यकर्ता शामिल होंगे।

भाजपा नेताओं को जनसंपर्क से रोकने के विवाद में दो सपाई गिरफ्तार

गाजीपुर । पुलिस ने जंगीपुर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी रामनरेश कुशवाहा व समर्थकों को यादवबहुल्य जयंतीदासपुर(नावापुर) में जनसंपर्क से रोकने को लेकर हुए विवाद में दो सपा समर्थकों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने दोनों को कोर्ट में पेश किया, जहां से जेल भेज दिया गया। उधर, पुलिस ने वीडियो के आधार पर आरोपितों की धरपकड़ शुरू का बुधवार को भाजपा प्रत्याशी अपने समर्थकों के साथ नावापुर में जनसंपर्क करने के लिए पहुंचे। इसी बीच बाइकों पर सवार होकर आए आठ-दस की संख्या में सपा समर्थकों ने भाजपा प्रत्याशी व समर्थकों को सपा का गांव बताकर प्रचार से रोक दिया। इसे लेकर भाजपा समर्थकों ने विरोध किया तो नौबत हाथापाई तक पहुंच गई। भाजपा कार्यकर्ता मलसा निवासी श्रवण राम और पूनम मौर्या के साथ अभद्रता शुरू कर दी। श्रवण राम ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया कि सपा समर्थकों ने अभद्रता के साथ ही मारपीट की। इसके विरोध में भाजपा प्रत्याशी व समर्थक जगीपुर थाने पर पहुंचकर धरने पर बैठ गए। भाजपा कार्यकर्ता आरोपितों के खिलाफ कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे। सूचना पर केंद्रीय

राज्यमंत्री संजीव बालियान, जिलाध्यक्ष भानुप्रताप सिंह, कृष्णबिहारी राय, विजय मिश्रा आदि ने भी थाने पहुंचकर धरना दिए। सीओ ओजस्वी चावला के मुकदमा दर्ज के आश्वासन पर भाजपा का धरना समाप्त हुआ। इसके बाद पुलिस ने भाजपा कार्यकर्ता मलसा निवासी श्रवण राम की तहरीर पर जयंतीदासपुर निवासी वीरेंद्र यादव और मुनीब यादव सहित दस के खिलाफ एससी-एसटी सहित कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया। थानाध्यक्ष ने बताया कि भाजपा प्रत्याशी व समर्थकों से विवाद करने वाले कमलेश यादव निवासी वनकटा बिरनो व दुर्गेश यादव निवासी भोजपुर मरदह को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने एक बुलेट भी बरामद की है, जिस पर सपा का झंडा लगा था। गाजीपुर जंगीपुर विधानसभा क्षेत्र के गांव जयंतीदासपुर(नावापुर) में भाजपा प्रत्याशी रामनरेश कुशवाहा व समर्थकों से विवाद के मामले में आइजी वाराणसी के सत्यनारायण ने गांव पहुंचकर ग्रामीणों से घटना की जानकारी ली। उन्होंने गांव का भ्रमण किया। आइजी ने कहा कि शांतिपूर्ण व निष्पक्ष चुनाव में बाधा डालने वाले दोषियों के खिलाफ पुलिस सख्ती से निपटेगी। इसके बाद उन्होंने जंगीपुर मंडी समिति में स्ट्रांग रूम का भी निरीक्षण किया और व्यवस्था की जानकारी ली।

भारतीय पशुपालन संघ का दूसरा स्थापना दिवस मनाया

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी) । कृष्णा लान पुराना पोखरा के प्रांगण में

आज शुक्रवार दोपहर में भारतीय पशु पालक संघ दूसरा स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। भारतीय पशुपालक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय बहादुर यादव ने बताया कि यह दूसरा स्थापना दिवस है हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी हम लोग एकत्र होकर स्थापना दिवस मना रहे हैं। जो हमारा उद्देश है कि पशुपालकों को सुरक्षित रखने व उन्हें किसी प्रकार का कोई परेशानी ना हो उन्हीं के सेवा में लगे हुए हैं। और राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सभी पदाधिकारियों को माल्यार्पण कर स्वागत किये कार्यक्रम में उपस्थित। प्रदेश अध्यक्ष मुरलीधर यादव, उपाध्यक्ष सुजीन्द्र सिंह, उपाध्यक्ष विपिन कुमार यादव, ब्लॉक अध्यक्ष रामदास मौर्य, मनोज कुमार बिंद , रमेश शर्मा संतोष कुमार यादव, कोषाध्यक्ष परमेश्वर पालजी, विजय शर्मा, आदि लोग उपस्थित रहे।

यूक्रेन में फंसी एमबीबीएस की छात्रा गरिमा, स्वजन चिंतित

खेतासराय (जौनपुर) । क्षेत्र के शाहापुर गांव निवासी डा. गजेंद्र पांडेय की पुत्री गरिमा पांडेय यूक्रेन के डेनिप्रो शहर में फंसी हुई हैं। वह वहां के डेनिप्रो यूनिवर्सिटी में एमबीबीएस चतुर्थ वर्ष की छात्रा हैं। यूक्रेन पर रूस के हमले की खबर से माता-पिता समेत अन्य स्वजन चिंतित हो गए हैं। हर समय उसके कुशल क्षेम के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहे हैं। पिता गजेंद्र पांडेय ने भारत सरकार से बेटी समेत अन्य भारतीय छात्रों को सुरक्षित स्वदेश लाने की मांग की है। बताया कि यूक्रेन में हालात बिगड़ने से पहले ही वह बेटी को वापस लाने की जुगत में जुट गए थे। गरिमा की फ्लाइट से सकुशल वापसी के लिए उन्होंने 35 हजार रुपये भी यूक्रेन भेज दिया था। उसको तीन मार्च को यूक्रेन के ओडेसा से वाया दोहा कतर होते हुए दिल्ली आने की फ्लाइट का टिकट भी मिल गया था, लेकिन आज जब बात हुई तो पता चला कि रूस ने यूक्रेन पर हमला कर दिया है। इस कारण ज्यादातर एयरपोर्ट बंद कर दिए गए हैं। कुछ छात्रों को एयरपोर्ट से भी लौटा दिया गया है। गरिमा ने फोन पर स्वजनों को बताया कि हमें अपने कमरे में ही रहकर दूतावास के संपर्क में रहने को कहा गया है। बताया कि यहां एटीएम और खाने-पीने की सामग्री की दुकानों पर मारामारी की स्थिति उत्पन्न हो गई है। मां रो-रो कर हुई बेहाल यूक्रेन के बदतर हो रहे हालत की जानकारी होते ही बेटी की चिंता में मां रंजना का रो-रो कर बुरा हाल हो गया है। वह कुछ बोलने में भी असहज महसूस कर रही थीं। भाई गौरव प्रयागराज में एक कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर के पद पर तैनात है, जिसने फोन पर बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इस पर अविलंब ठोस कदम उठाने चाहिए ताकि भारतीय छात्र छात्राएं अपने घर सकुशल आ सकें। दूसरा भाई अभिनव भी अपनी बहन की सकुशल वापसी के लिए हैरान है। इनका कहना है कि हम लोगों की चिंता इस कदर बढ़ गई है कि परिवार के लोगों को भोजन भी अच्छा नहीं लग रहा है। अब सब कुछ ईश्वर के हाथ में है।

महात्मा गांधी स्व रोजगार योजना का तीन दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी) । युवा-युवतियों को जब तक आत्मनिर्भर नही बनाया जाएगा तब तक देश

विकसित नही होगा। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय मे मेक इन इंडिया का सपना तभी साकार होगा जब गाव का हर युवा/युवती स्वावलम्बन की दिशा मे अग्रसर होगा उक्त बातें बैजलपटी स्थित राजेश्वरी बालिका इंटर कॉलेज के संभागार मे आयोजित तीन दिवसीय महात्मा गांधी स्व- रोजगार योजना के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे मण्डलीय अधिकारी बी0 गौतम ने प्रशिक्षण समापन में व्यक्त की। उन्होंने कहा कि आत्म निर्भर बनाने हेतु अचार, मुरब्बा, चिप्स, जेली ,जेम,विविध व्यंजन बनाने की जानकारी दी गई। इस अवसर पर जिला प्रभारी डॉ0 रतन्श चंद्र अग्रवाल मंडलीय लेखा अधिकारी आकाश गुप्ता, विनोद कुमार, नूपुर उपस्थित रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कौशलेंद्र नारायन सिंह ने किया।

कार और ऑटो में भिड़ंत चार गंभीर रूप से घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
सर्वेश कुमार यश

हरहुआ (वाराणसी) । ईंट भट्ठा से मजदूरी कर अपनें घर जा रहे आटो सवार मजदूरों की आटो में कार की टक्कर में 4 लोग घायल हो गये बड़ागांव थानाक्षेत्र के सिसवा

गांव निवासी रामप्रसाद 27 व उसकी पत्नी अनीता देवी 25 क्षेत्र के भेलखा स्थित ईंट भट्ठे पर मजदूरी करते हैं। बृहस्पतिवार दोपहर भट्ठे से अपनें दो छोटे पुत्रों व पत्नी के साथ आटो पर सवार होकर वापस घर जा रहे थे। हरहुआ ओवरब्रिज पर पीछे से आ रही तेज गति कार नें आटो में धक्का मार दिया। जिसमें आटो पलट जानें से रामप्रसाद, अनीता एवं उनका पुत्र धनश्याम 5 वर्ष व अरुण 3 वर्ष घायल हो गये। वहीं कार की ड्राइविंग कर रही नेहा दुबे ने धक्का मारने के बाद तेज रफ्तार से गाड़ी लेकर भागने की फिराक में हो गयी। सूचना पर पीआरवी के पुलिसकर्मियों ने नेहा दुब को दौड़कर पकड़ा और कार को पुलिस ने चौकी पर लायी। नेहा दूबे भेलूपुर थाना अंतर्गत निवासी है उनका गाड़ी महाराष्ट्र की है। पुलिस कार को कब्जे में लेनें के साथ ही सभी घायलों को निजी अस्पताल में भर्ती कराया।

सात व्यक्तियों के पास से बरामद हुए 16.16 लाख रुपये

जौनपुर । विधानसभा चुनाव निष्पक्ष व स्वतंत्र संपनन कराने और धनबल का दुरुपयोग रोकने के लिए पुलिस व उड़न दस्तों का साझा अभियान और तेज हो गया है। जिले भर में चेकिग के दौरान सात व्यक्तियों के पास से 16,16,634 रुपये बरामद हुए हैं। रुपये जब्त कर वैधानिक कार्रवाई की जा रही है। मछलीशहर में गुरुवार को चुंगी चौराहा पर चेकिग में पवन कुमार पांडेय निवासी नवधन सुथवाई थाना ऊंज जिला संत रविदास नगर (भदोही) के पास से बैग में 5,15,000 रुपये मिले। पूछताछ में वह कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे सका। लाइन बाजार थाना सिविल लाइन तिराहे पर दीपक कुमार मौर्या निवासी खजुरहवां कोतवाली मड़ियाहूं के पास से दो बंडलों में 2,31,684 रुपये बरामद हुए। मुंगराबादशाहपुर में चेकिग के दौरान दया शंकर जैसवार निवासी सराय पंवारा के चार पहिया वाहन से 3,40,000 रुपये मिले। शहर में चहारसू चौराहा पर चेकिग में

उग्रसेन यादव निवासी कलीचाबाद थाना लाइन बाजार के के बैग से 1,35,950 रुपये मिले। केराकत में सरायबीरू चौराहे पर राजेश कुमार साहू निवासी नरहन (केराकत) के पास से एक लाख व नीरज यादव निवासी गंगौली थाना केराकत के पास से एक लाख दो हजार रुपये मिले। नौपेड़वा प्रतिनिधि के मुताबिक, बक्शा में विधानसभा क्षेत्र मल्हनी सेक्टर मजिस्ट्रेट नरेश कुमार, एके यादव, थानाध्यक्ष दिव्य प्रकाश सिंह की टीम ने विशाल निवासी धनियामऊ के पिकअप वाहन की सीट के नीचे से 1,92,000 रुपये बरामद किए। इस कार्रवाई से आदर्श चुनाव आचार संहिता प्रभावी होने की दशा में 50 हजार रुपये से अधिक नकदी लेकर चलने वालों में खलबली मच गई है।

सपा-बसपा की सरकारों में चरम सीमा पर थी भ्रष्टाचार और गुंडागर्दी-अभिनेत्री हेमा मालिनी

(आधुनिक समाचार सेवा)
शीतल प्रसाद गुप्ता

बलिया।भाजपा सांसद व फिल्म जगत की जानी-मानी सिने अभिनेत्री हेमा मालिनी ने शुक्रवार को इस बागी बलिया के जनता इंटर कालेज नगरा के मैदान में बिल्थरारोड विधान सभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी छटठू राम के

समर्थन में आयोजित चुनावी सभा को संबोधित करते हुए फिल्म शोले के डायलाग चल धनू बसंती के इज्जत का सवाल है बोल कर जनता को तालियां बजाने को मजबूर कर दिया।उन्होने अपने भाषण की शुरुआत राजा बलि,महर्षि बाल्मिकी,दुर्वासा व मंगल पांडेय की बागी और पावन धरती को प्रणाम करके सभी का अभिवादन किया। एक विशाल जनसभा को संबोधित करते हुए अभिनेत्री सांसद हेमा मालिनी ने कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पांच साल के कार्यकाल में उत्तर-प्रदेश को उत्तम प्रदेश बनाया है।प्रदेश की 25 करोड़ जनता के चेहरे पर आत्म विश्वास व खुशहाली दिखाई दे रही है। सपा व बसपा पर प्रहार करते हुए कहा कि इन दोनों सरकारों में भ्रष्टाचार व गुंडागर्दी चरम सीमा पर थी। योगी जी का नाम आते ही दंगाइयों व भ्रष्टाचारियों में खलबली मच जाती है। इस दौरान प्रधानमंत्री की चर्चा करते हुए हेमा मालिनी ने कहा कि आज नरेंद्र मोदी वर्ल्ड लीडर के रुप में उभरें हैं।ऐसे प्रधान मंत्री पर गर्व होना चाहिए। प्रधान मंत्री यूक्रेन व रसिया के बीच छिड़े युद्ध को रोकने का प्रयास कर रहें हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में आज बेटियां सुरक्षित हैं। अपराधी माफिया जेल में हैं। भाजपा सरकार में किसान भी खुश हैं। उनके फसल की अच्छी कीमत मिल रही है। किसान सम्मान निधि के तहत छह हजार रुपए सलाना किसानों को मिल रहा है। महिलाओं के लिए घर घर में शौचालय का निर्माण हुआ है। माह में दो बार राशन मिल रहा है। सांसद ने किसी के बहकावे में न आ कर कमल के फूल पर बटन दबाने का आह्वान किया। समारोह मे बिल्थरारोड नगर पंचायत के अध्यक्ष दिनेश कुमार गुप्त सहित भाजपा के नेताओ ने सिने अभिनेत्री हेमा मालिनी की जोरदार स्वागत किया।इस दौरान सभा को प्रत्याशी छट्ठू राम, जिलामंत्री आलोक शुक्ल सहित भारतीय जनता पार्टी के नेताओ ने भाजपा उम्मीदवार को वोट देने का अनुरोध किया।

प्रेक्षक ने माहुल पहुंच पीड़ित परिवारों का जाना हाल

माहुल (आजमगढ)। फूलपुर पवई विधान सभा के चुनाव प्रेक्षक नितिन पाटिल गुरुवार को माहुल इलाके का दौरा किए। उन्होंने जहरीली शराब पीकर मरे लोगों के स्वजन से उनके घर-घर पहुंच घटना के बारे में जानकारी ली। उन्हें सांत्वना देते हुए कहाकि मातृ शक्ति अगर चाह ले तो क्षेत्र में शराब से मुक्ति मिल सकती है। पिछले चार दिन से माहुल और आसपास के गावों में जहरीली शराब का कहर बरप रहा है। इसके सेवन से माहुल कस्बे सहित आसपास के गावों के आधा दर्जन से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। कई काल के गाल में जा समाए तो बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़े थे। विधान सभा चुनाव में इसके प्रभाव की आशंका को देखते हुए यहां पहुंचे चुनाव पर्यवेक्षक सबसे

पहले वार्ड नंबर पांच के मृत रामकरन के घर पहुंचे। उनके इकलौते पुत्र रमेश से घटना की जानकारी ली। उसके बाद वार्ड नंबर छह के मृत झब्बू सोनकर के घर भी पहुंचे थे। यहां की एक पीड़ित कौशल्या ने शराब के ठेके को बंद करने की मांग उठाई। नितिन पाटिल ने कहा कि महिलाएं चाह लें तो शराब का ठेका हीं नहीं घर में भी शराब बंद हो सकती है। उन्होंने बुंदेलखंड के गुलाबी गैंग का जिक्र करते हुए महिलाओं में ऊर्जा भी भरी। यहां से निकले तो वार्ड नंबर छह के संतराम व गुमकोठी गांव के रविकांत के घर जाकर शोकाकुल परिवार को सांत्वना दी। नायब तहसीलदार .फूलपुर सुशील कुमार, अधिशासी अधिकारी माहुल दिनेश चंद्र आर्य ,चेयरमैन बदरे आलम,थानाध्यक्ष अहरौला संजय सिंह आदि रहे।

वाराणसी में एक बंदी की मौत पर जिला जेल में बवाल सिपाहियों पर किया हमला

वाराणसी । जिला जेल में शुक्रवार की सुबह एक बंदी की मौत होने पर जिला जेल में बंदी आक्रोशित हो गए। बंदियों ने जिला जेल प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए जमकर हंगामा करने लगे। इस दौरान बंदियों और बंदी रक्षकों में मारपीट भी हुई। करीब तीन घंटे तक जेल में अफरा-तफरी की स्थिति रही। पहुंची कमिशनरेट पुलिस ने मोर्चा संभालते हुए बंदियों को खदेड़कर माहौल शांत कराया। उधर, बंदी के मौत की सूचना मिलते ही परिवारीजन जिला जेल पहुंच गए और उन्होंने भी जिला प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाया है। शव मंडलीय अस्पताल होने पर परिवारीजन पहुंच गए। यहां भी सुरक्षा को देखते हुए फोर्स की तैनाती कर दी गई है। सिगरा थाना क्षेत्र के बड़ी गैबी के रहने वाले राजेश जायसवाल (53) पर धोखाधड़ी का मुकदमा चेतगंज थाने में दर्ज है। पिछले छह माह से इस आरोप में वह जिला जेल में बंद है। तीन दिन पहले उनकी तबीयत खराब होने जिला जेल प्रशासन ने बाहर चिकित्सक को दिखाया था। गुरुवार की रात राजेश जायसवाल के सीने में दर्द होने लगा। उन्होंने और साथ रह रहे अन्य साथियों ने जेल कर्मियों ने चिकित्सक को दिखाने की बात कही। के चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार करते हुए दवा भी दी लेकिन सुबह उनकी हालत अधिक बिगड़ गई। बंदियों का आरोप था कि जेल प्रशासन की लापरवाही और समय से उपचार नहीं होने के चलते राजेश जायसवाल की मौत हो गई। साथ

अब मेडिकल स्टोर पर सीसीटीवी कैमरा अनिवार्य

आजमगढ़। जिले में मेडिकल स्टोरों पर सीसीटीवी कैमरा लगाना अनिवार्य हो गया है। इसके लिए शासन ने निर्देश जारी कर दिया है। इससे समय-समय पर जिले की दवा दुकानों पर पहुंचकर औषधि निरीक्षक सीसीटीवी फुटेज की जांच कर सकेंगे। अगर बिना डाक्टर के पर्चे के दवाएं देते कोई मेडिकल स्टोर संचालक पाया गया तो उसके विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाएगी। इसके माध्यम से

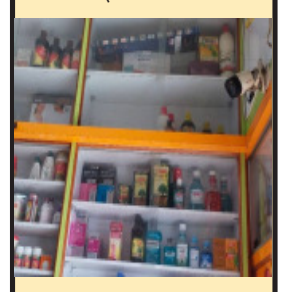

नशीली दवाओं की बिक्री पर भी नजर रखी जाएगी। जिले में 975 दवा की फुटकर दुकानें हैं। इसमें लगभग 35 फीसद दुकानों में सीसीटीवी कैमरा लग चुका है। सहायक आयुक्त औषधि मनु शंकर ने बताया कि राज्य बाल संरक्षण आयोग की सिफारिश पर बच्चों को नशे से दूर रखने के लिए सरकार ने यह आदेश जारी किया है। बताया कि फुटकर दवा विक्रेताओं के यहां सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। उन्होंने सभी मेडिकल स्टोर संचालकों को तत्काल लगाने का निर्देश दिया है। निरीक्षण के समय किसी दवा विक्रेता की दुकान पर सीसीटीवी कैमरे नहीं पाए गए तो उनके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जाएगी। समय समय पर दुकानों का निरीक्षण करने के साथ ही सीसीटीवी कैमरे की फुटेज की भी जांच की जाएगी।

अनुपस्थित कार्मिक आज अनिवार्य रूप से लें प्रशिक्षण

सोनभद्र । विधानसभा सामान्य निर्वाचन, 2022 को सकुशल, निष्पक्ष, शांतिपूर्ण व पारदर्शी ढंग से संपन्न कराने के

उद्देश्य से राजकीय पालीटेकिन्क कालेज लोढ़ी में मतदान कार्मिकों के प्रशिक्षण स्थल एवं मतदान के लिए बनाए गए फैलिटेशन सेंटर पर मतदान किया गया। इस दौरान कुल 10 मतदान कार्मिक अनुपस्थित रहे। इस दौरान प्रशिक्षण स्थल पर मौजूद कार्मिकों को ईवीएम और वीवीपैट का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण के दौरान अशोक कुमार, कल्लन सीएचसी चोपन, रंजन कुमार एआरएलएम, लखनलाल पीएनबी छपका, सत्य प्रकाश मिश्रा प्रभागीय वनाधिकारी कार्यालय रेनुकूट, लहरी अधिशासी अभियंता कार्यालय पिपरी, अमित कुमार एनाआरएलएम कार्यालय दुद्धी, पारसनाथ बीईओ कार्यालय नगवां, विजयी प्रसाद जीआईसी तुर्रा पिपरी कार्यालय, सन्हलता बीईओ चोपन कार्यालय अनुपस्थित रहें। गुरुवार को प्रशिक्षण में कुल 10 मतदान कार्मिक अनुपस्थित पाए गए। जिला निर्वाचन अधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्देशित करते हुए कहा है कि गुरुवार के प्रशिक्षण में जो 10 मतदान कार्मिक अनुपस्थित पाए गए हैं, वह 25 फरवरी को अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण प्राप्त कर लें अन्यथा की दशा में उनके विरूद्ध प्राथमिकी दर्ज की कार्यवाही की जाएगी।

अंगूठा न लगवाने पर किसानों ने किया विरोध प्रदर्शन

सोनभद्रः बृहस्पतिवार को कलेक्ट्रेट परिसर में घोरावल तहसील के किसानों ने विरोध प्रदर्शन किया और नारेबाजी की।

आरोप लगाया कि क्रय केंद्रों पर धान तो क्रय कर लिया गया लेकिन अब तक अंगूठा नहीं लगवाया गया। इससे किसानों के धान का भुगतान भी नहीं हो सका है। इसको लेकर किसानों में असंतोष है। प्रदर्शन कर रहे किसानों ने बताया कि घोरावल परगना बड़हर के ओबरा डीह साधन सहकारी समिति पर दर्जनों किसानों का धान विक्रय किया गया है। धान विक्रय के बाद तमाम किसानों का अंगूठा नहीं लगाया गया है। 20 जनवरी से 27 जनवरी तक किसी का भी अंगूठा नहीं लगाया गया है। किसानों ने बताया कि किसी किसान के बहन की शादी तो किसी को कर्ज चुकाने के लिए धन की जरूरत है लेकिन किसी का भी कार्य नहीं हो रहा है। किसानों का 850 कुंतल अभी धान का तौल हो चुका है। किसानों का आरोप है कि विभागीय कतिपय अधिकारियों, कर्मचारियों द्वारा अंगूठा लगवाने के लिए रुपये की मांग की जा रही है। किसानों ने चेताया कि यदि उनके धान का भुगतान नहीं किया गया तो वे आंदोलन करने के लिए बाध्य होंगे। किसानों ने डीएम का ध्यान इस ओर आकृष्ट कराते हुए संबंधित किसानों का अंगूठा लगाकर भुगतान कराने की मांग की है। इस मौके पर धनंजय सिंह, जगमोहन सिंह, जनार्दन, रामा सिंह, लाल बहादुर, मनीष कुमार, मनोज कुमार, अमरेश कुमार सहित दर्जनों किसान मौजूद रहे।

गरज-चमक के साथ बारिश संग गिरे ओले

मीरजापुर । जिले में मौसम ने अचानक करवट बदला। गुरुवार दोपहर 12 बजे के बाद गरज-चमक के साथ बारिश संग ओलावृष्टि भी हुई। इससे गेहूं, आलू, सरसों सहित तमाम फसलों को नुकसान पहुंचा। आम के बौर को भी क्षति पहुंची है। इससे किसानों की माथे पर चिता की लकीरें खींच गईं। बरसात ने सर्दी में थोड़ी बढ़ोतरी कर दी सुबह की शुरुआत साफ मौसम के साथ हुई, धूप खिली। दोपहर होते-होते अचानक मौसम बदला और बादल छाने लगे। घने बादल छाने के साथ कछवां सहित कई भागों में बारिश संग ओलावृष्टि भी हुई। पुरवा हवा के झोकों के साथ शुरू हुई बारिश संग पड़े ओलों ने किसानों की चिता बढ़ा दी। जिले में इस वर्ष रवि की फसल अन्य वर्षो से काफी अच्छी रही है। माह हुई बारिश से सिचाई भी अच्छी हो गई थी किंतु भारी ओला पड़ने से किसान सशंकित हैं। अगेती बोई गई गेहूं की फसलों में बालियां निकल आई हैं। सरसों की फसल फलकर लटक चुकी है। का नुकसान तेज हवाओं के झोकों से होना संभावित है। मसूर की फसल भी ओले से क्षतिग्रस्त हुई है। उप निदेशक कृषि डा. अशोक उपाध्याय ने बताया कि जनपद में असामयिक वर्षा व ओलावृष्टि की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

ओलावृष्टि से फसलों को भारी क्षति, किसान चिंतित

सोनभद्र। जिले में गुरुवार को अचानक मौसम बिगड़ गया। दोपहर में हल्की हवा व बारिश के साथ ओलावृष्टि होने लगी। ओलावृष्टि के कारण दलहनी व तिलहनी फसलों को भारी क्षति का अनुमान लगाया जा रहा है। वहीं मौसम के खराब बने रहने के कारण किसानों की धड़कन भी बढ़ गई हैं। जिला मुख्यालय से सटे आसपास के इलाकों में गुरुवार को सुबह से ही मौसम बिगड़ता नजर आया। दोपहर में ठंडी हवाएं चलने लगी। इससे लोगों को बारिश के आसार नजर आने लगे। देखते ही देखते हल्की बारिश के साथ जबरदस्त ओलावृष्टि होने लगी। जिला मुख्यालय से सटे हिन्दुआरी, केकराही, करमा आदि क्षेत्रों में खूब ओलावृष्टि हुई। इससे किसानों की सरसो, मटर, चना, अरहर, मसूर की फसलों की भारी क्षति हुई। वहीं मौसम के लगतार बिगडे़ रहने के कारण किसान चिंतित नजर आए। घोरावलः तहसील क्षेत्र के कुछ हिस्सों में दोपहर के वक्त बिगड़े मौसम ने किसानों को नुकसान पहुंचाया। कई जगह ओले पड़े। किसानों का मटर चना और सरसों फल फूल रहा था, मौसम ने कहर ढा दिया। बिसहार बहोरिका में ओला वृष्टि

हुई। किसान रमाशंकर पांडेय, शिवपूजन सिंह, बुद्धिसागर सिंह, उमाकांत तिवारी, गुलाब सिंह, केवला प्रसाद शुक्ल आदि किसानों की फसलें प्रभावित हुई है। बताया कि ओलावृष्टि से हजारों हेक्टेयर में बोई गई गेहूं तथा दलहनी-तिलहनी फसलों को खासा नुकसान हुआ है। वहीं अभी भी मौसम खराब बना रहने से जिले के अन्य हिस्सों के किसानों के भी धड़कन बढ़ी हुई है। बताते चलें कि जहां गेहूं की बालियां निकल रही हैं, वहीं चना, मटर, मसूर के साथ ही सरसों की फसल भी धीरे-धीरे तैयार होने की तरफ बढ़ रही है। इस बार बीच-बीच में बारिश होने के कारण गेहूं के साथ ही दलहनी और तिलहनी फसलों की भी अच्छी स्थिति मानी जा रही थी। क्षेत्र के मोकरसिम, पुरखास, बिसहार, विसुंधरी, पेढ़ में ओलावृष्टि हुई है। इसके अलावा जिले में पनूगंज क्षेत्र में जमकर ओलावृष्टि हुई है। वैनी क्षेत्र में गुरुवार की सुबह अचानक मौसम बदल गया। तेज हवा के साथ बौछार होने लगी। पांच मिनट बाद ओले गिरने लगे। कहीं कहीं बहुत ज्यादा ओले गिरे, जिससे दलहन तिलहन की फसलों का काफी नुकसान हुआ है। जब तक बारिश रुकती तब तक काफी नुकसान हो चुका था। अभी भी मौसम का मिजाज बिगड़ा हुआ नजर आ रहा है।

ईवीएम व वीवीपैट मशीन का हुआ रैंडमाइजेशन

सोनभद्र। विधानसभा सामान्य निर्वाचन, 2022 के तहत बुधवार की शाम कलेक्ट्रेट सभागार में प्रेक्षकगण की देखरेख में ईवीएम व वीवीपैट मशीन का दूसरा रैंडमाइजेशन किया गया। इस दौरान जिला निर्वाचन अधिकारी टीके शिबु ने बताया कि 07 मार्च, 2022 को जिले में मतदान प्रक्रिया संपनन कराई जानी है। इसे लेकर ईवीएम मशीन व वीवीपैट का प्रत्याशियों व उनके प्रतिनिधियों के सामने दूसरा रैंडमाइजेशन कराया गया। इस अवसर पर विधान सभा-400-घोरावल के प्रेक्षक रणधीर कुमार, 401-राबर्ट्सगंज के प्रेक्षक ई. श्रीधर, 402-ओबरा के प्रेक्षक घनेंद्र भान चतुर्वेदी, 403- विधान सभा दुद्धी के प्रेक्षक मृदुल कुमार महन्ता व राजनीतिक दलों के प्रत्याशी व निर्दल प्रत्याशियों सहित उनके प्रतिनिधि मौजूद रहे। इस मौके पर अपर जिलाधिकारी राकेश सिंह, रिटर्निंग आफिसरगण, सहायक निर्वाचन अधिकारी जगरूप सिंह पटेल आदि मौजूद रहे।

वृद्धा की हत्या के आरोप में युवक गिरफ्तार

सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र के कुरहुल गांव में चार दिन पूर्व चंपा देवी 85 की हुई हत्या के मामले का पुलिस ने गुरुवार को खुलासा कर दिया। पुलिस ने इस मामले में वृद्धा को खाना देने गए युवक आरोपित देवराज पांडे पुत्र राम निहोर पांडे निवासी कुरहुल को गिरफ्तार किया है। वह वृद्धा का पट्टीदारी में नाती है। पुलिस ने उसके पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू व चंपा देवी का मोबाइल बरामद किया है। उसका पुलिस ने चालान कर दिया। इस संबंध में थाना प्रभारी निरीक्षक केके सिंह ने बताया कि चंपा देवी के पास जमीन व पैसे थे। चंपा देवी ने जमीन बेचकर बैंक से पैसा निकाला था। उसने 24 जनवरी को उसने 48000 रुपये जबकि 4 फरवरी को उसने 42000 रुपये बैंक से निकाला था। कुल 90000 रुपये उसने निकाला था। देवराज व उसके परिवार के लोग चंपा देवी से अक्सर रुपये लेते थे। कभी बहला-फुसलाकर तो कभी किसी काम के बहाने रुपये ले लेते थे। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि घटना वाले दिन देवराज अपने पटीदार की दादी चंपा देवी को खाना पहुंचाने गया तो वहां उसने दादी से रुपये की डिमांड की। जब दादी ने रुपये देने से मना किया तो उसने छीना झपटी शुरू की। इस दौरान दोनों में हाथापाई भी हुई। इस पर युवक देशराज ने चंपा देवी का पहले गला दबा दिया और जब वह मर गई तो मामले को छुपाने के लिए उसने उसके गले को चाकू से रेत दिया। थानाध्यक्ष ने बताया कि चंपा देवी के खाते में अभी लगभग 25000 रुपये बचा हुआ था। वही लेने के लिए देवराज ने ऐसा किया। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि देवराज को गुरुवार को बसकटवा मोड़ से गिरफ्तार कर लिया गया। उसके पास से हत्या में प्रयुक्त चाकू व चंपा देवी का मोबाइल भी बरामद किया गया है।

पोस्टल बैलेट से 420 स्थानीय कर्मचारियों ने किया मतदान

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव को लेकर जिले में तैयारियां जोरों पर चल रही हैं। कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। मंडलायुक्त शुक्रवार को नोडल अधिकारियों के साथ चुनावी तैयारियों की समीक्षा बैठक भी करेंगे। इसी के साथ गुरुवार को

कर्मचारियों ने पोस्टल बैलेट के जरिए अपने मतों का प्रयोग किया। जिले में तैनात स्थानीय 420 कर्मचारियों ने अपने मतों का प्रयोग किया। स्थानीय स्तर के तैनात कर्मचारियों को मतदान की निर्धारित तिथि 7 मार्च से पूर्व ही मतदान पोस्टल बैलेट के जरिए करना था। सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी जगरूप पटेल ने बताया कि घोरावल विधानसभा क्षेत्र में 36, राबर्ट्सगंज में 118, ओबरा में 151 व दुद्धी विधानसभा क्षेत्र में 115 शिक्षकों, कर्मचारियों ने मतदान किया। इसको लेकर राजकीय पालिटेक्निक कालेज में कतार लगी रही। पोस्टल बैलेट से वोट देने के लिए जिला निर्वाचन विभाग की ओर से पहले से ही तैयारी कर ली गई थी। एक तरफ कर्मचारियों का चुनाव संबंधी प्रशिक्षण हुआ तो दूसरे तरफ कर्मचारियों को वोट डालने के लिए भी व्यवस्था की गई थी। शिक्षक, कर्मचारी अपने मतों का इस्तेमाल कर काफी खुश नजर आए। उधर दूसरे दूसरे जिलों के पोस्टल बैलेट मतपत्र से जुड़े नोडल अफसर उप निदेशक कृषि डीके गुप्ता ने बताया कि दूसरे जिलों के शिक्षकों, कर्मचारियों के लिए 292 पोस्टल बैलेट की मांग की गई है। यह पोस्टल बैलेट संबंधित कर्मचारियों के स्थायी पते पर उसी जिले के निर्वाचन विभाग की ओर से भेजा जाएगा। तब कर्मचारी अपने मत का प्रयोग कर पोस्टल बैलेट को पोस्ट करेगा।

अबूझहाल में बिस्तर पर मिला वृद्ध का शव हत्या की आशंका

चुनार (मीरजापुर) । क्षेत्र अंतर्गत सझौली गांव में सत्यनारायण सिंह (72) का शव अबूझहाल में बिस्तर पर पड़ा मिला। कान और नाक से खून निकल रहा था और एक हाथ की मुट्ठी बंधी हुई थी। ऐसे में हत्या की आशंका जताते हुए मृतक के समधी और दामाद की तहरीर पर पुलिस पड़ताल कर रही है। सीखड़ इलाके के ग्राम मढ़िया के मूल निवासी सत्यनारायण सिंह और उनके बड़े भाई वंशनारायण को सझौली गांव में इनकी बहन द्वारा खेती योग्य जमीन दी गई थी। यहां दोनो भाई अलग-अलग रहकर खेती-किसानी करते थे। सत्यनारायण ने गांव के बाहर प्राथमिक विद्यालय के पास अपना घर बनवाया था और उसी में अकेले रहते थे। इनके पुत्र रामभरोसे की मृत्यु बीमारी के चलते करीब छह वर्ष पूर्व हो चुकी है और बहू पूजा सिंह अपने छह वर्षीय पुत्र के साथ मढ़िया स्थित पुश्तैनी घर में रहती है। गुरुवार की सुबह जब सझौली गांव के लोग टहलने के लिए निकले तो दरवाजा खुला देख आवाज दी।

कार्मिकों ने प्रशिक्षण में सीखा ईवीएम से मतदान कराने का हुनर

मीरजापुर । विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 में लगाए गए पीठासीन, मतदान अधिकारी प्रथम, द्वितीय व तृतीय कर्मचारियों का प्रशिक्षण गुरुवार को हुआ। प्रशिक्षण के दौरान कार्मिकों को ईवीएम व वीवी पैट की मदद से मतदान कराने का हुनर सिखाया गया। जिला मजिस्ट्रेट प्रवीण कुमार लक्षकार ने निर्वाचन प्रक्रिया संबंधी प्रशिक्षण दिया। कहा कि सभी कार्मिक ध्यान से प्रशिक्षण प्राप्त करें। मुख्य विकास अधिकारी व प्रभारी अधिकारी कार्मिक श्रीलक्ष्मी वीएस ने ईवीएम संचालन सहित अन्य जानकारी दी। प्रशिक्षण के बाद कर्मचारियों ने पोस्टल बैलेट के माध्यम से मताधिकार का प्रयोग करें। प्रशिक्षक आईटीआई प्राचार्य प्रमोद शाक्यवार, जीआईसी महेंद्र सोनकर ने कार्मिकों को निर्वाचन तथा इसमें प्रयोग होने वाले कागजात के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्मिकों को निर्वाचन प्रक्रिया के साथ ही ईवीएम का सैद्धांतिक

एवं व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। निर्वाचन प्रशिक्षण के दुसरे दिन पहली पाली में 651 से 975 तथा दूसरी पाली में 976 से 1300 तक के कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के दौरान कोविड-19 से बचाव के मददनेजर शारीरिक दूरी बनाने संग मास्क व सैनेटाइजर का प्रयोग अनिवार्य किया गया था। बताया कि चुनाव कराने के लिए राजकीय पालिटेकिन्क कालेज बथुआ से पोलिग पार्टियों को रवाना किया जाएगा। चुनाव के बाद ईवीएम व मतदान सामग्री वहीं जमा कराया जाएगा। मतदान आगामी सात मार्च को सुबह सात बजे से शाम छह बजे तक होगा। विधानसभा सामान्य निर्वाचन 2022 के लिए राजकीय पालीटेक्निक कालेज मीरजापुर से पोलिग पार्टियों की रवानगी व मतगणना होगी। इसके मददेनजर रवानगी स्थल एवं मतगणना स्थल का मंडलायुक्त योगेश्वर राम मिश्र, उपपुलिस महानिरीक्षक आरके भारद्वाज ने निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया। जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने तैयारी व उपपुलिस महानिरीक्षक/पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह ने सुरक्षा व्यवस्था की जानकारी दी। सीडीओ श्रीलक्ष्मी वीएस, अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ला, नगर मजिस्ट्रेट विनय सिंह, डीपीआरओ अरविद कुमार रहे।

दारोगा व रेलकर्मी का निधन दोनों को सांस की थी बीमारी

जमालपुर । गुरुवार दोपहर बाद अचानक मौसम बदला और हवा के साथ हुई बारिश से किसानों के चेहरे पर चिंता की लकीरें खींच गई। ओलावृष्टि से भाईपुर कलां, जाफरखानी, चिलबिलियां, जिनोदपुर, लठिया-सहिजनी आदि गांव के किसानों के चेहरे पर मायूसी छा गई। शेरवां निवासी किसान दुर्गेश द्विवेदी ने बताया कि ओलावृष्टि से सरसों, मसूर एवं मटर की फसल को नुकसान हुआ है। भाईपुर कलां निवासी किसान दीपू सिंह ने बताया कि ओलावृष्टि से गेहूं के उत्पादन पर प्रभाव पड़ेगा। गरज-चमक के साथ बारिश संग हुई ओलावृष्टि से फसलों को भी आंशिक क्षति हुई। लगभग 15 मिनट लगातार हुई बारिश से सरसों, अलसी, चना, अरहर, सब्जी के फसलों को आंशिक क्षति हुई। ओला पड़ने से किसानों के माथे पर चिंता की लकीरें देखी गई।

ओबरा सी की पहली इकाई में कई परीक्षण शुरू

ओबरा (सोनभद्र) । निर्माणाधीन ओबरा सी से जल्द उत्पादन शुरू होने के संकेत दिखने लगे हैं। 660 मेगावाट की पहली इकाई का आक्जलरी बायलर

लाइटप पूरा कर लिया गया है। तय लक्ष्य के तहत आगामी 31 मार्च को बायलर लाइटप किया जाना है। जिसको देखते हुए तमाम तकनीकी परीक्षण किए जा रहे हैं। पिछले कुछ दिनों के दौरान हुए परीक्षण की तेज गूंज 20 किलोमीटर दूर तक सुनाई दी। खासकर ओबरा कालोनी सहित बाजार क्षेत्र में इस शोर की जमकर चर्चा रही। बहरहाल सबकुछ ठीक रहा तो नए वित्त वर्ष में ओबरा सी ग्रिड से जुड़ जाएगी। साथ ही मई में व्यावसायिक उत्पादन भी शुरू हो जाएगा। कोरोना और मानसून सहित तमाम तकनीकी समस्याओं के कारण ओबरा सी के निर्माण में एक वर्ष से ज्यादा की देरी हो चुकी है। इससे पहले अगस्त 2021 में 660 मेगावाट वाली दोनों इकाइयों के स्टार्टअप पावर हेतु ओबरा परियोजना के बी ताप गृह के स्विच यार्ड से नवनिर्मित 400 केवी पारेषण लाइन को सफलतापूर्वक चार्ज कर दिया गया था। स्टार्टअप पावर हेतु पारेषण लाइन का निर्माण उत्तर प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कारपोरेशन द्वारा किया गया है। इसके अलावा 660 मेगावाट वाली पहली इकाई के बायलर का हाइड्रो टेस्ट पिछले वर्ष ही किया गया था। इसके अलावा 275 मीटर ऊंची चिमनी के 269.48 मीटर कंक्रीट के बाहरी आवरण को तैयार करने में सफलता मिली थी। 660-660 मेगावाट की दोनों इकाइयों के लिए बनी चिमनी के अंदरूनी हिस्से में आधुनिक तकनीक का प्रयोग किया जा रहा है।

संवादहीनता के दौर में धूमिल हो रहे घर परिवार के स्नेहिल संबंध

मीरजापुर । अज्ञेय सम्मान, हिदी गौरव, साहित्यभूषण आदि अलंकरणों से विभूषित व राष्ट्रीय हिदी समालोचक डा. भवदेव पांडेय की 12वीं पुण्यतिथि पर गुरुवार को तिवरानी टोला स्थित शोध संस्थान कार्यालय पर संवाद की परंपरा और भाषा की सभ्यता विषय पर साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अमित कुमार यादव द्वितीय ने कहा कि बाजारवाद, भूमंडलीकरण व पाश्चात्य संस्कृति की विषैली हवाओं ने भारतीय ऋषियों एवं मनीषियों के उदात्त भावनाओं को प्रभावित किया है। नए दौर की भाषा को भी प्रभावित किया है। कहा कि श्रीमद्भगवतगीता का संदेश है कि संवाद और भाषा उत्कृष्ट होनी चाहिए। संवाद के लिए भाषा इस्तेमाल करने के पहले खूब चितन-मनन करना चाहिए। पद्मश्री सम्मान से सम्मानित लोक गायिका अजिता श्रीवास्तव ने आंचलिक गीतों सार्थक संवाद और भाषिक सभ्यता का पुष्पक विमान कहा और लोकगीत सुनाकर उसका उदाहरण भी दिया। गीतकार गणेश गंभीर ने विषय की गंभीरता, उसकी गहराई, उतना की परिक्रमा व्यापक रूप से की। राजेश कुमार मिश्र ने कहा कि सार्थक संवादों से जटिल से जटिल विषयों को सरल बनाने का दौर अब संवादहीनता के दौर में बदल गया है। घर-परिवार में सनेहिल संबंध धूमिल होते जा रहे हैं। इसका खामियाजा समाज भुगत रहा है। गरीबी और बेरोजगारी भी सार्थक संवाद न होने का कारण है। डा. आशा राय, नंदिनी मिश्र ने समाज को स्वस्थ और समृद्ध बनाने के लिए संवादशैली व भाषा के स्तर को उच्च स्तरीय बनाने पर जोर दिया। गीतकार एवं समालोचक अरविद अवस्थी, प्रो. राजमोहन शर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किया।

डीएम व एसपी ने चौपाल के माध्यम को दिलाया सुरक्षा का भरोसा

जिगना (मीरजापुर)। जिलाधिकारी प्रवीण लक्षकार व पुलिस अधीक्षक अजय कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से जिगना क्षेत्र के गौरा व बिहसड़ा कला गांव में चौपाल लगाकर मतदाताओं को जागरूक किया। साथ ही सुरक्षा का भरोसा दिलाते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि भयमुक्त होकर सात मार्च को अधिक से अधिक मतदान करें। अगर किसी के द्वारा धमकी व लालच दिया जा रहा है तो उसकी सूचना तत्काल पुलिस को दें। जिससे उसके खिलाफ कार्रवाई की जा सके। पुलिस अधीक्षक ने मतदान में व्यवधान उतपन्न करने वालों को आगाह करते हुए कहा कि चुनाव व मतदान को लेकर किसी प्रकार की परेशानी डालने का प्रयास किया गया तो आने वाली पीढ़ियों को भी इसकी सजा भुगतनी पड़ सकती है। गौरा निवासी एक व्यक्ति का असलहा लाइसेंस को निरस्त करने की कार्रवाई के लिए थाना प्रभारी को निर्देशित किया। एसपी ने आचार संहिता का उल्लंघन करने वालों की शिकायत दर्ज कराने के लिए प्रेरित किया और हेल्पलाइन की जानकारी दी। इस दौरान थाना प्रभारी विजय कुमार, प्रधान प्रतिनिधि मनोज सिंह, ग्राम प्रधान चंद्रशेखर मौर्या, पार्थ सिंह, रमेश सिंह, राजाराम सोनकर, पूर्व प्रधान कूच्छु बिद आदि रहे। निर्माण में आपत्ति जताने पर होगी कार्रवाई प्राथमिक विद्यालय बिहसड़ा जर्जर हाल में क्षतिग्रस्त कर दिया गया था, पुनः नवनिर्माण पर आपत्ति जताने वाले पर कार्रवाई की चेतावनी देते हुए तत्काल विद्यालय निर्माण के लिए निर्देशित किया। साथ ही थाना प्रभारी जिगना को निर्देशित करते हुए कहा कि निर्माण में आपत्ति डालने वालों पर तत्काल कार्रवाई करें।

भूमि विवाद को मारपीट में महिला की मौत, बहू व पोती घायल

मीरजापुर : पड़री थाना क्षेत्र के देवपुरवा गांव में भूमि विवाद को लेकर बुधवार की शाम हुई मारपीट में मालती (50) पत्नी स्व. मुरली की मौत हो गई, जबकि उसकी बहू व पोती घायल हो गई। पुत्र रामकुमार की तहरीर पर पुलिस ने पांच लोगों के विरुद्ध एससी एसटी, गैरइरादतन हत्या, बलवा, गाली-गलौज आदि धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। देवपुरवा गांव निवासी मालती देवी के बगल में आबादी की भूमि में कुआ है। उसके आसपास की भूमि को कब्जा करने को लेकर मालती और उसके पड़ोसी नंदा प्रजापति के बीच विवाद हो गया। यह देख मालती ने 112 नंबर पुलिस को फोनकर घटना की शिकायत की। मौके पर पहुंची 112 नंबर पुलिस बगैर किसी को कुछ देर बाद मामला बढ़ने पर दोनों पक्षों के बीच मारपीट हो गई। इसमें मालती देवी, उसकी बहू सुगरी (30) व पोती मनोरमा (18) घायल हो गई। आसपास के लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया।

अपनी ही कक्षा के बच्चों को पढ़ाते दिखी छात्रा

सोनभद्र। विधानसभा चुनाव व शिक्षकों के चल रहे प्रशिक्षण से परीषदीय स्कूलों में शिक्षकों की हो रही कमी से शिक्षण व्यवस्था चुनौती साबित हो रही है। बावजूद इसके शिक्षकों की कमी को विद्यालय के छात्र दूर करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे है। विद्यालय के छात्र खुद ही अपनी कक्षा के बच्चों को पढ़ाने

में लग जा रहे है। चोपन ब्लाक के प्राथमिक विद्यालय पड़रीपान में गुरुवार को कुछ ऐसा ही नजर आया। विद्यालय में छात्र तो पढ़ते हुए मिले, लेकिन कोई अध्यापक वहां नजर नहीं आया। बाहर बरामदे में एक बालिका कक्षा 4 के छात्रों को हिन्दी विषय को पढ़ाते हुए दिखी। उसके पढ़ाने का तरीका किसी शिक्षक से कम न था। देखते ही देखते उसने बोर्ड पर प्रशनें के उत्तर को भी लिख डाला। इसके लिए उसे कुर्सी पर चढ़ना पड़ा। प्राथमिक विद्यालय पड़रीपान 73 बच्चे नामांकित है और यहां पर एक प्रधानाध्यापक, एक सहायक अध्यापिका और एक शिक्षामित्र तैनात हैं। सहायक अध्यापिका मातृत्व अवकाश पर चल रही थी और 24 तारीख को शिक्षामित्र की इलेक्शन ड्यूटी थी। विद्यालय में करीब 67 बच्चे उपस्थित थे। प्रधानाध्यापिका अकेले ही विद्यालय का संचालन कर रही थी। उन्होंने एक कक्षा को कार्य दिया व अन्य कक्षा 1 व 2 में वह बच्चों को पढ़ा रही थी। बाल संसद की अध्यक्ष जूली केसरी जो कि कक्षा चार में पढ़ती है, उन्होंने अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए अपनी कक्षा में पढ़ाना शुरू किया और उन्होंने सभी बच्चों को पहले गणित विषय में महत्तम समापवर्तक को बोर्ड पर समझाया। जब प्रधानाध्यापिका ने यह देखा तो उन्हें बड़ी प्रसनन्ता हुई और उन्होंने वह कक्षा जूली केसरी को ही सौंप दिया।

ईशान की बल्लेबाजी पर रोहित की प्रतिक्रिया कहा मैं उनका माइंडसेट जानता है

लखनऊ। श्रीलंका के खिलाफ पहले टी20 मैच में विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन अपने पुरानें रंग में नजर आए। ईशान भले ही इस मैच में शतक बनाने से चूक गए लेकिन उन्होंने केवल 56 गेंदों पर 89 रन की पारी खेल कर जीत की नींव रखी। उनकी इस पारी की मदद से भारत ने 2 विकेट खोकर 199 रन बनाए। अंतर्राष्ट्रीय टी20 क्रिकेट में यह ईशान की दूसरी अर्धशतकीय पारी थी। ईशान ने अपनी पारी में 10 चौके और 3 छक्के लगाए। ईशान की यह पारी टी20 में भारतीय विकेटकीपर द्वारा खेली गई सर्वश्रेष्ठ पारी है। मैच के बाद कप्तान रोहित शर्मा ने ईशान किशन की बल्लेबाजी की प्रशंसा की और कहा कि उनमें योग्यता है और दूसरे छोर पर खड़े होकर किसी बल्लेबाज द्वारा उनको बैटिंग करते देखना सुखद है। मैं ईशान को लंबे समय से जानता हूं। मुझे उनकी माइंडसेट के बारे मे पता है। मैं उनकी क्षमताओं को जानता हूं। बस उन्हें एक इस तरह के पारी की जरुरत थी जो उन्होंने इस मैच में खेली। जिस तरह से उन्होंने अपनी पारी को आगे बढ़ाया वो कमाल था। हम आपस में गैप्स के बारे में भी

बात कर रहे थे। हालांकि मैच के बाद ईशान किशन ने कहा कि ओपनिंग स्लाट को लेकर वे आश्वस्त नहीं है और किसी भी क्रम में बल्लेबाजी करने के लिए वे तैयार हैं। इससे पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ भी ईशान को रोहित के साथ ओपनिंग करने का मौका मिला था लेकिन वे सफल नहीं हुए थे। वेस्टइंडीज सीरीज के बाद तो उनके ओपनिंग कराने के फैसले पर भी सवाल उठने लगे थे। लेकिन रितुराज गायकवाड़ के न खेलने पर ईशान को एक बार फिर से ओपनिंग करने का मौका मिला। ईशान की इस पारी ने उन्हें आने वाले मैचों में भी ओपनिंग के लिए प्रबल दावेदार बना दिया है। देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले मैचों में ये सिलसिला आगे यूं ही जारी रहता है या इसमें कुछ बदलाव किया जाता है।

पूर्व पाकिस्तानी क्रिकेटर बोले दुनिया की सबसे बड़ी लीग कोई नहीं इसके आसपास

नई दिल्ली। आस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम काफी लंबे समय बाद पाकिस्तान का दौरा कर रही है। ऐसे में इंडियन प्रीमियर लीग की फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल और कोलकाता नाइटराइडर्स ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट से अपने स्कवाएड में शामिल आस्ट्रेलियाइ खिलाडियों को दौरे के लिए शुभकामनाएं दी थीं। गौरतलब है कि इस दौरे के कारण आइपीएल 2022 की शुरुआत में कई आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर उपलब्ध नहीं होंगे। इससे खुश होकर पाकिस्तान के पूर्व स्पिनर दानिश कनेरिया ने आइपीएल की तारीफ की है। इसे दुनिया की सबसी बड़ी लीग बताया। साथ ही कहा कि कोई दूसरी लीग उसके करीब भी नहीं है दिल्ली कैपिटल्स में आस्ट्रेलिया के मिशेल मार्श और डेविड वार्नर है, जबकि कोलकाता नाइट राइडर्स ने आइपीएल 2022 की नीलामी में आस्ट्रेलिया के टेस्ट कप्तान पैट कमिंस को वापस खरीदा। इन खिलाडियों को दोनों फ्रेंचाइजियों ने शुभकामनाएं दी। इसे लेकर

कनेरिया ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा, 'आइपीएल फ्रेंचाइजियों ने पाकिस्तान दौरे के लिए आस्ट्रेलियाई खिलाडियों को शुभकामनाएं दीं। वहां कुछ भी गलत नहीं है। भारत हमेशा अपने खिलाडियों का समर्थन करता है। कनेरिया ने आइपीएल की तारीफ करते हुए कहा, 'आइपीएल दुनिया की सबसे बड़ी लीग है। इससे बड़ा कुछ नहीं है और इसके आसपास भी कोई नहीं है। आइपीएल से जुड़े लोग क्रिकेट में सबसे सम्मानित लोगों में से हैं। हर बार जब कोई टीम पाकिस्तान छोड़ती है तो कुछ लोग भारत को दोष देते हैं। यदि कोई खिलाड़ी दौरे से बाहर हो जाता है, तो दोष भारत पर आ जाता है। कुछ भी गलत होता है, इसके लिए भारत को जिम्मेदार ठहराया जाता है। लेकिन वहां से कोई रिएक्शन नहीं आता। आइपीएल फ्रेंचाइजियों ने अपने खिलाडियों के प्रति जो भाव दिखाया बहुत शानदार था।' बता दें कि आइपीएल के 15वां सीजन 26 मार्च से शुरू होगा। 29 मई को फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। इस बार 10 टीमें खेलेंगी।

टी-20 में विजयी रथ पर सवार भारत, लगातार 10 मैच जीते, आखिरी बार इस टीम से मिली थी हार

नई दिल्ली। रोहित शर्मा की कप्तानी वाली टीम इंडिया टी-20 क्रिकेट में विजयी रथ पर सवार है। पिछले 10 मुकाबलों में सभी में टीम को जीत मिली है। लगातार दो सीरीज 3-0 से अपने नाम करने के बाद टीम इंडिया फिलहाल श्रीलंका से तीन मैचों की टी-20

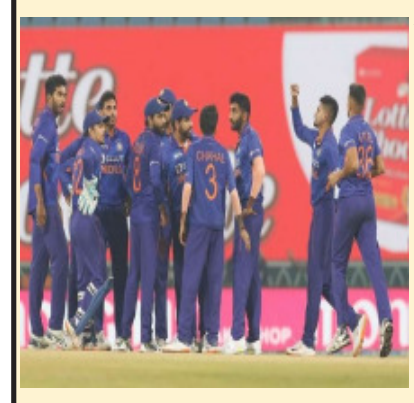

सीरीज खेल रही है। सीरीज का पहला मुकाबला गुरुवार को लखनऊ के इकाना इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया। मेजबान टीम ने 62 रनों से जीत हासिल की। सबसे छोटे फार्मेट में टीम इंडिया का विजयी सफर आइसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में शुरू हुआ था। इसके बाद से अभी तक टीम कोई भी मैच नहीं हारी है। आइसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 के बाद न्यूजीलैंड की टीम भारत दौरे पर तीन टी-20 और दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेलने आई थी। रोहित शर्मा को तभी वनडे और टी-20 में कप्तान बनाया गया था। कीवी टीम का टी-20 सीरीज में क्लीन स्वीप हुआ। इसके बाद टीम इंडिया दक्षिण अफ्रीका दौरे पर टीम इंडिया गई। टेस्ट और वनडे दोनों में टीम का प्रदर्शन खराब रहा। हालांकि, दौरे पर टी-20 सीरीज नहीं हुई थी। चोटिल होने के कारण रोहित इस दौरे पर नहीं गए थे। इसके बाद वेस्टइंडीज की टीम भारत दौरे पर तीन वनडे और तीन टी-20 मैचों की सीरीज खेलने आई। दोनों में मेहमान टीम का क्लीन स्वीप हुआ। क्रिकेट के सबसे छोटे फार्मेट में टीम इंडिया को आखिरी बार आइसीसी टी-20 वर्ल्ड कप 2021 में न्यूजीलैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा था। इससे पहले पाकिस्तान से भी उसे हार का सामना करना पड़ा था। वहीं आफगानिस्तान, स्काटलैंड और नामिबीया को हराया था। टीम टूर्नामेंट के सेमीफाइनल में पहुंचने में असफल रही थी।

भारत ने श्रीलंका के खिलाफ जीत से किया आगाज, सीरीज में 1-0 की बढ़त बनाई

नई दिल्ली। टीम इंडिया और श्रीलंका के बीच तीन मैचों की टी 20 सीरीज का पहला मुकाबला लखनऊ के इकाना इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला गया। इस मैच में श्रीलंका की टीम के कप्तान दासुन शनाका ने टास

जीतकर पहले गेंदबाजी का फैसला किया। टीम इंडिया ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 2 विकेट के नुकसान पर 199 रन बनाए और श्रीलंका को जीत के लिए 200 रन का टारगेट दिया। जीत के लिए मिले 200 रन के लक्ष्य के जवाब में मेहमान टीम 20 ओवर में 6 विकेट पर 137 रन बनाए और उसे 62 रन से हार मिली। इस जीत के साथ भारतीय टीम ने तीन मैचों की टी20 सीरीज में 1-0 की बढ़त हासिल कर ली। ये टी20 में बतौर फुलटाइम भारतीय कप्तान रोहित शर्मा की लगातार दसवीं जीत रही। टास हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए टीम इंडिया को रोहित शर्मा और ईशान किशन ने शानदार शुरुआत दिलाई। दोनों ने 10 ओवर में ही 98 रन कूट दिए। दोनों के बीच 11.5 ओवरों में 111 रनों की साझेदारी हुई। रोहित शर्मा को 44 रन पर आउट करके लाहिरु कुमारा ने इस साझेदारी को तोड़ा और टीम इंडिया को पहला झटका दिया। ईशान किशन के तौर पर दूसरा झटका लगा। 89 रन पर उन्हें दासुन शनाका ने आउट किया। श्रेयस अय्यर 57 और रवींद्र जडेजा 3 रन बनाकर नाबाद रहे। दूसरी पारी में श्रीलंका का पहला विकेट पारी की पहली ही गेंद पर गिर गया। भुवनेश्वर कुमार ने ओपनर बल्लेबाज पथुम निसानका को गोल्डन डक पर आउट कर दिया। टीम को दूसरा झटका तीसरे ओवर में लगा। भुवनेश्वर ने कामिल मिशारा 13 रन पर पवेलियन भेजा। सातवें ओवर में जनिथ लियानागे को आउट 11 रन पर आउट करके वेंकटेश अय्यर ने श्रीलंका को तीसरा झटका दिया। 10वें ओवर में रवींद्र जडेजा ने दिनेश चांदीमल को 10 रन पर आउट करके श्रीलंका को चौथा झटका दिया। दासुन शनाका को तीन रन पर आउट करके यजुवेंद्रा चहल ने टीम को पांचवां झटका दिया। चमिका करुणारतने 21 रन को वेंकटेश अय्यर ने पवेलियन भेजकर श्रीलंकरा को छठा दिया। असलंका 53 रन जबकि दुशमंथा चमीरा 24 रन बनाकर नाबाद रहे। भारत की तरफ से भुवी व अय्यर को दो-दो जबकि चहल और जडेजा को एक एक सफलता मिली। रोहित शर्मा (कप्तान), ईशान किशन (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर, संजू सैमसन, दीपक हुड्डा, रवींद्र जडेजा, वेंकटेश अय्यर, हर्षल पटेल, भुवनेश्वर कुमार, जसप्रीत बुमराह, युजवेंद्रा सिंह चहल। पथुम निसानका, कामिल मिशारा, चरित असलंका, दिनेश चांदीमल (विकेटकीपर), जेनिथ लियानागे, दासुन शनाका (कप्तान), चमिका करुणारतने, जेफरी वांडरसे, प्रवीण जयविक्रमा, दुशमंथा चमीरा, लाहिरु कुमारा। भारत की तरफ से दीपक हुडा ने श्रीलंका के खिलाफ अपने अंतरराष्ट्रीय टी20 क्रिकेट करियर की शुरुआत की तो वहीं भारतीय प्लेइंग इलेवन में संजू सैमसन को जगह दी गई।

जडेजा को ऊपर बल्लेबाजी कराने के पीछे ये थी कप्तान रोहित शर्मा की सोच

लखनऊ। भारत ने श्रीलंका को पहले टी20 मैच में 62 रनों से हरा दिया है। इस मैच में दो महीने बाद वापसी कर रहे रविंद्र जडेजा को बल्लेबाजी के लिए ऊपर भेजा गया था। जड़ेजा समान्यतौर पर 6 या 7 नंबर पर बल्लेबाजी करते हैं लेकिन पहले मैच में उन्हें 4 नंबर पर बल्लेबाजी के लिए भेजा गया था। हालांकि जडेजा लंबी पारी नहीं खेल पाए और महज 3 रन बनाकर आउट हो गए। मैच के बाद रोहित शर्मा ने इस फैसले के बारे में कहा जडेजा की वापसी से मैं बहुत खुश हूं। हम उनसे ज्यादा योगदान की उम्मीद रखते हैं इसलिए उन्हें बल्लेबाजी के लिए ऊपर भेजा था। आगे आने मैचों में भी आपको ये देखने को मिलेगा। मैं चाहता हूं कि वो बल्लेबाजी के लिए ऊपर आएं और ज्यादा रन बनाएं। वे बहुत प्रभावशाली क्रिकेटर

है और व्हाइट बाल क्रिकेट में हम उनके रोल को लेकर क्लियर हैं। आपको बता दें कि जडेजा ने दो महीने बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी की है। इस मैच में भले ही वो अपनी बल्लेबाजी से कुछ कमाल न दिखा पाएं हों लेकिन वो एकमात्र गेंदबाज थे जिन्होंने 4 ओवर का कोटा पूरा किया। 4 ओवर की गेंदबाजी में जडेजा ने 28 रन देकर 1 विकेट लिया। रोहित जडेजा को पहले ही एक मल्टी युटिलिटी खिलाड़ी बता चुके हैं। टीम के फिल्डिंग को लेकर कप्तान थोड़े निराश दिखे। उन्होंने कहा कि बड़े मैदान में खेलना हमें पसंद है लेकिन हम कई आसान कैच छोड़ रहे हैं। हमारे फिल्डिंग कोच इस पर काम कर रहे हैं और जल्द हीं हम एक मजबूत फिल्डिंग साइड के तौर पर दिखाई देंगे। सीरीज का दूसरा मैच धर्मशाला में शनिवार को खेला जाएगा जहां भारत की नजर मैच जीतकर सीरीज अपने नाम करने पर होगी।

कोरोना के कारण आइसीसी ने उठाया बड़ा कदम

क्राइस्टचर्च। आइसीसी वुमेंस क्रिकेट वर्ल्ड कप 2022 को लेकर अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने एक बड़ा फैसला किया है। इसके अनुसार अगर कोई टीम कोरोना से प्रभावित हो जाती है तो वह नौ खिलाडियों के साथ मैदान पर उतर सकती है। आइसीसी ने गुरुवार को इसकी घोषणा की। आइसीसी ने टीमों का समर्थन करने और टूर्नामेंट को यथासंभव सामान्य रूप से जारी रखने के लिए व्यवस्था की है। इसके अलावा मैच टाई होने पर तबतक सुपर ओवर होगा जबतक नतीजा नहीं निकल जाता। हेड आफ इवेंट्स क्रिस टेटली ने एक आधिकारिक विज्ञप्ति के अनुसार कहा,कोरोना के दृष्टिकोण से हमें थोड़ा लचीला होने की जरूरत है। हम इन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए खेल का प्रबंधन करते है। आधिकारिक तौर पर टीम के स्कवाएड में 15 खिलाड़ी होंगे, लेकिन साथ कुछ और खिलाड़ी लाए जा सकते हैं ताकि कोरोना के कारण जरूरत पड़ने पर उन्हें अस्थायी तौर पर जगह दी जा सके।

लगातार तीसरे साल रोहित शर्मा हैं आइपीएल के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी, कोहली व एम एस धौनी इस नंबर पर

न्नई दिल्ली। रोहित शर्मा के सितारे इन दिनों बुलंदियों पर हैं और इसका एक और प्रमाण सामने आया है। कुछ दिन पहले ही रोहित शर्मा को भारतीय वनडे व टी20 के बाद टेस्ट टीम का कप्तान भी बना दिया गया था तो वहीं वो आइपीएल के सबसे लोकप्रिय खिलाड़ी के तौर पर सामने आए हैं। दरअसल हंसा रिसर्च की एक स्टडी से पता चला है कि मुंबई इंडियंस के कप्तान पिछले 3 सीजन से आइपीएल में सबसे पसंदीदा खिलाड़ी हैं। वहीं इस रिसर्च के मुताबिक विराट कोहली दूसरे नंबर पर हैं तो सीएसके के कप्तान एम एस धौनी तीसरे नंबर पर लोकप्रियता के मामले में मौजूद हैं।

वहीं दूसरी तरफ इस रिपोर्ट में दावा किया गया है कि चेनन्ई सुपर किंग्स टीम लोकप्रियता के मामले में पहले नंबर पर है तो वहीं मुंबई इंडियंस दूसरे जबकि रायल चैलेंजर्स बैंगलोर तीसरे नंबर पर मौजूद है। की 2021 की रिपोर्ट के अनुसार पिछले सीजन में कुल 60 मैच खेले गए जिसमें 117 ब्रांडों के 219 ब्रांड वेरिएंट मैचों के दौरान दिखाई दिए। इन 117 ब्रांडों द्वारा लगभग 13,85,103 सेकेंड का उपयोग किया गया, जो कि 2020 के मुकाबले 36.64ज़् ज्यादा रही। हालांकि राजस्व धारणा माडल शायद 2022 में बदल दिया जाएगा। इस रिपोर्ट के महत्व पर टिप्पणी करते हुए हंसा रिसर्च के सीईओ प्रवीण निझारा ने कहा कि साल दर साल स्पोर्ट्स मार्केटिंग को प्रमुखता मिलने के साथ हम ब्रांड के प्रभाव पर गहन विश्लेषण करते हैं साथ ही हम इंडियन प्रीमियर लीग (आइपीएल) के दौरान एक दशक से अधिक समय से 'आइपीलोमेनिया' के माध्यम से ब्रांडों, खिलाडियों, टीमों को ट्रैक कर रहे हैं और इसके बाद ही हम किसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं। आपको बता दें कि रोहित शर्मा बतौर कप्तान इस लीग के सबसे सफल खिलाड़ी है और उनकी कप्तानी में मुंबई की टीम पांच बार विजेता बनी है तो वहीं धौनी की कप्तानी में सीएसके चार बार चैंपियन बनी है। हालांकि विराट कोहली की कप्तानी में आरसीबी एक बार भी चैंपियन नहीं बनी, लेकिन फिर भी वो रोहित के बाद इस रिपोर्ट के मुकाबिक लोकप्रियता के मामले में दूसरे नंबर पर मौजूद है। वहीं धौनी का तीसरे नंबर पर आना थोड़ा चौकाता जरूर है।

IPL 2022: 26 मार्च से होगा आइपीएल के 15वें सीजन का आगाज, 29 मई को खेला जाएगा फाइनल मुकाबला

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग के 15वें सीजन की शुरुआत 26 मार्च से होगी और इसका फाइनल मुकाबला 29 मई को खेला जाएगा। आइपीएल गवर्निंग काउंसिल की बैठक में ये फैसला लिया गया। ब्रिजेश पटेल की अगुआई में हुई इस बैठक में बीसीसीआइ अध्यक्ष सौरव गांगुली के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला के मुताबिक आइपीएल 2022 की शुरुआत 26 मार्च से होगी और आइपीएल इस साल महाराष्ट्र में खेला जाएगा। हमें विश्वास है कि स्टेडियम में कुछ फीसदी दर्शकों को आने की अनुमति दी जाएगी और हम सरकार द्वारा दिए गए दिशा-निर्देश के मुताबिक चलेंगे।

70 लीग मैचों में से 55 मैच मुंबई में जबकि 15 मैच पुणे में खेले जाएंगे। ये सभी मुकाबले चार स्टेडियम में खेले जाएंगे जिसमें 20 मैच वानखेड़े स्टेडियम, 15 मैचों का आयोजन ब्रेबान स्टेडियम, 20 मुकाबले डीवाई पाटिल स्टेडियम में जबकि 15 मैचों का आयोजन महाराष्ट्र क्रिकेट एसोसिएशन ग्राउंड, पुणे में किया जाएगा। वहीं आइपीएल के शेड्यूल को पूरी तरह से कुछ दिनों में फाइनल किया जाएगा। इनसाइड स्पोर्ट्स के मुताबिक फिलहाल आइपीएल को लेकर ये डेट सामने आई है।

भारत के प्लेइंग इलेवन में बड़े बदलाव की उम्मीद, किन खिलाडियों को मिलेगी जगह

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम आज शाम श्रीलंका के खिलाफ तीन मैचों की टी20 सीरीज के पहले मैच में खेलने उतरेगी। वेस्टइंडीज का क्लीन स्वीप करने के बाद टीम

इंडिया के हौसले बुलंद है। हालांकि टीम इंडिया को उस मुकाबले से पहले दो झटके लगे हैं लेकिन कप्तान रोहित शर्मा इससे ज्यादा चिंतित नहीं है। सूर्यकुमार यादव और दीपक चाहर चोट की वजह से सीरीज के बाहर हो गए है। उनकी जगह प्लेइंग इलेवन में नए चेहरे नजर आ सकते हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ आखिरी टी20 में इशान किशन और रितुराज गायकवाड को कप्तान रोहित शर्मा ने पारी की शुरुआत करने भेजा था। श्रीलंका के खिलाफ भी यह जोड़ी ओपनिंग करती नजर आ सकती है। वैसे रितुराज और रोहित भी पारी की शुरुआत करने उतर सकते हैं। विराट कोहली को आराम दिया गया है और सूर्यकुमार चोटिल हैं ऐसे में संजू सैमसन को टीम में मौका दिया जा सकता है। कप्तान रोहित भी प्रेस कान्फ्रेंस में उनको विश्व कप के लिए तैयार करने की बात कह चुके हैं। उनको तीसरे नंबर पर उतार जा सकता है। इसके बाद ओपनिंग ना करने पर इशान या रोहित चौथे नंबर पर खेल सकते हैं। वेंकटेश अय्यर और सूर्यकुमार यादव ने वेस्टइंडीज के खिलाफ नीचले क्रम को संभाला था। श्रेयस को सूर्या जैसी पारी खेलनी होगी और वह इस सीरीज में उनकी जगह बल्लेबाजी करते नजर आ सकते हैं।

राशिफल

मेष-: आज आप बौद्धिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे. भौतिक संसाधनों की ओर अधिक झुकाव के कारण इनमें वृद्धि हो सकती है। यात्रा की स्थिति सुखद और लाभकारी रहेगी।

वृष-: आज आपका किसी से तीखा झगड़ा हो सकता है. इस झगड़े से बचने की पूरी कोशिश करें, आपको बाद में पछताना पड़ सकता है। इस दौरान किया गया कोई भी झगड़ा भयानक रूप ले सकता है।

मिथुन-: आज आपका दिन पहले से बेहतर रहेगा. आप अपने भविष्य के बारे में थोड़ा सोच सकते हैं। संबंध बेहतर रहेंगे। कार्यस्थल पर आपको सहयोग मिल सकता है।

कर्क-: आज ही भविष्य के लिए अपनी आर्थिक योजना बनाएं और अपनी योजना और लक्ष्य तय करने का प्रयास करें. कार्यस्थल पर विवाद खत्म होने से सुख शांति में वृद्धि होगी।

सिंह-: आज आपके परिवार में खुशियों की वृद्धि होगी. संतान की शिक्षा में उन्नति संभव है। माता-पिता का स्वास्थ्य आज बहुत अच्छा रहेगा। उनसे भी आपको पूरा सहयोग मिलने की उम्मीद है

कन्या-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आप अपनी सूझबूझ से सारे काम संभाल लेंगे। नौकरीपेशा लोगों को साथ काम करने वालों से मदद मिलेगी।

तुला-: आज आपको आर्थिक और पारिवारिक क्षेत्र में भी लाभ होने की संभावना है। आज मनपसंद खाना खाकर आपको आनंद मिलेगा।नौकरी में अधिक मेहनत करें।

वृश्चिक-: आज आपको व्यापार में सफलता मिलेगी. जो आपको गर्व और जोश से भर देगा। इस तरक्की को हासिल करने से आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही कदम उठाए है।

धनु-: आज अधिकारी आपकी प्रशंसा करेंगे. छात्रों को किसी भी प्रतियोगी परीक्षा में अच्छे अंक मिलेंगे। वैवाहिक जीवन में आप अच्छा महसूस करेंगे। समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मकर-: आज आपको शुभ समाचार मिलेगा. सुबह व्यायाम करें, अतिरिक्त लाभ मिलेगा। आपका पार्टनर काफी नाराज़ रहेगा फिर भी अपने जीवन की सभी समस्याओं को नज़रअंदाज करते हुए।

कुंभ-: आज आपको कारोबार में सफलता मिलेगी. जो आपको गर्व और जोश से भर देगा। इस तरक्की को हासिल करने से आपको एहसास होगा कि आपने सही समय पर सही कदम उठाए

मीन-: आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। परिवार वालों की सलाह आपके लिए अहम रहेगी। साथ ही आप उनकी हर संभव मदद भी करेंगे। आपके भौतिक सुखों में वृद्धि होगी।

सम्पादकीय

वन्या स्कूल-कालेजों में लड़कियों का हिजाब पहनना इतना अहम मुद्दा है कि वह राष्ट्रीय विवाद और वैश्विक ध्यानाकर्षण का केंद्र बन जाए

अतीत से लेकर वर्तमान तक इस्लामिक जगत में हिजाब पहनना कभी अनिवार्य नहीं रहा। सऊदी अरब सहित अरब के खाड़ी देशों में महिलाएं पहले से ही हिजाब के साथ-साथ अमूमन बुर्का भी पहनती आई हैं। अफगानिस्तान में तो वे महिलाएं भी पारंपरिक रूप से हिजाब पहनती आई हैं, जो भले ही बुर्का न पहनती हों। हालांकि तुर्की जैसे कुछ देशों में सार्वजनिक स्थलों पर महिलाओं के हिजाब पहनने पर प्रतिबंध है। यह परंपरा महान तुर्क नेता कमाल अतातुर्क द्वारा 1928 में तुर्की को पंथनिरपेक्ष गणतंत्र घोषित करने के साथ आरंभ हुई। मौजूदा राष्ट्रपति रेसेप तैयप एर्दोगन के राज में तुर्की आधिकारिक रूप से तो पंथनिरपेक्ष राष्ट्र बना हुआ है, लेकिन वहां धार्मिक कट्टरता बढ़ी है और इसी कड़ी में हिजाब से प्रतिबंध हटा लिया गया है। यहां तक कि एर्दोगन की पत्नी भी हिजाब पहनती हैं। पिछली सदी के छठे दशक से मिस्र में हिजाब पहनने वाली बहुत कम महिलाएं दिखती थीं। जब 1977-78 के दौरान मैं काहिरा में था तब स्कूल-कालेज जाने वाली ऐसी लड़कियां कम ही दिखती थीं, जिन्होंने हिजाब पहना हो। हालांकि 1979 में ईरान में आयतुल्ला खुमैनी के नेतृत्व में हुई इस्लामिक क्रांति और सऊदी अरब द्वारा कट्टर बहाबी विचारधारा को बढ़ावा देने की कवायद ने मुस्लिम जगत में रूढ़िवादिता बढ़ाने का काम किया, जिसमें महिलाओं का पहनावा भी शामिल है। इसी कारण पिछले चार दशकों से कई इस्लामिक देशों में हिजाब का चलन आम हुआ है। जो महिलाएं पहले हिजाब नहीं पहनती थीं, वे भी अब इसे पहनने लगीं। इसे इस्लामिक पहचान से जोड़ दिया गया। 1990-93 के दौरान अपने मलेशियाई प्रवास के दौरान कुआलालंपुर में एक स्थानीय मित्र ने मुझे बताया कि उनके देश मे उन स्थानों में भी इसे अपना लिया गया, जहां इसका आम चलन नहीं था। स्पष्ट है कि समकालीन दौर में हिजाब धीरे-धीरे इस्लामिक पहचान का हिस्सा बनता गया। यही कारण है कि कर्नाटक के हालिया हिजाब विवाद को लेकर इस्लामिक जगत में कुछ प्रतिकूल टिप्पणियां सामने आईं। इसने पाकिस्तान जैसे दुश्मन देश को भारत के खिलाफ दुष्प्रचार करने का अवसर दे दिया। तीन तलाक के मामले में ऐसी कोई गुंजाइश नहीं मिली थी, क्योंकि ऐसी कुप्रथा पर कई मुस्लिम देशों में ही प्रतिबंधित है और तमाम ने तो उस पर रोक के लिए बाकायदा कानून भी बनाए हैं। ऐसे में तीन तलाक की समाप्ति के पक्ष में जो तर्क दिए गए, वे कक्षाओं में हिजाब पर प्रतिबंध के लिए नहीं दिए जा सकते। हिजाब विवाद पर अब अदालत में सुनवाई हो रही है। अदालत इस पर कानूनी रवैया अपनाएगी, परंतु विधिक निणय्र सभी सामाजिक मुद्दों का समाधान करने में संभव नहीं होते। विशेषकर उन मुद्दों का जो समाज के विभिन्न वर्गो की सामाजिक पहचान से संबंधित हों। ऐसी पहचानें भाषा, खानपान, पहनावा और जीवन के कई अन्य पहलुओं के आधार पर परिभाषित होती है। समय के साथ ये परिवर्तित हो जाती हैं, किंतु ऐसे बदलाव थोपे नहीं जा सकते। यदि इसके लिए दबाव बनाया जाएगा तो प्रतिरोध स्वाभाविक होगा। ऐसा प्रतिरोध सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ सकता है और राजनीतिक गतिविधियों में यह झलकने भी लगा है। इसीलिए भारत जैसे व्यापक विविधता वाले देशों में राजनीतिक एवं सामाजिक नेताओं के लिए आवश्यक हो जाता है कि वे संयम और सतर्कता के साथ काम करें ताकि उदार नीतियां सुनिश्चित की जा सकें। इसके लिए बहुत बुद्धिमानी आवश्यक है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने यह तय किया है कि विकास का लाभ समाज के सभी वर्गो तक पहुंचे। इसीलिए उन्होंने सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास का मंत्र दिया है। इसी क्रम में सबका विश्वास हासिल करने के लिए जरूरी है कि प्रत्येक समुदाय इसे लेकर आश्वस्त हो कि उसकी पहचान को भी सम्मान मिले। सामाजिक शांति, सद्भाव और स्थायित्व कायम रखने का यही तरीका है। किसी भी देश को प्रगति और विश्व में ऊंचा कद हासिल करने के लिए सामाजिक स्थायित्व अपरिहार्य है सामाजिक रूप से विभाजित और खंडित देश बाहरी और आंतरिक चुनौतियों का सामना नहीं कर सकता।

यूक्रेन जैसे किसी स्वतंत्र देश को अपनी कठपुतली बनाने के रूस के काम का भारत सैद्धांतिक रूप से समर्थन नहीं कर सकता

रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने वही किया, जिसकी आशंका थी। उन्होंने यूक्रेन पर हवाई हमले शुरू कर दिए और रूसी सेनाएं पूर्व, पश्चिम और दक्षिण, तीनों दिशाओं से यूक्रेन में दाखिल हो गईं। अमेरिका और नाटो देशों के आर्थिक प्रतिबंधों से तमतमाए पुतिन ने यूक्रेन की सेना को हथियार डालने की सलाह दे डाली है। अमेरिका को संभवतः इसकी आशंका तो थी कि यूक्रेन के पूर्वी डानबास क्षेत्र के डोनेस्क और लुहांस्क प्रांतों पर कब्जा कर वहां रूस की कठपुतली सरकारें बनाने की कोशिश की जाएगी, पर चारों ओर से हमला करके यूक्रेन के

विसैन्यीकरण की चाल की आशंका शायद किसी को नहीं थी। रूस यूक्रेन के हवाईअड्डों और बंदरगाहों को इसलिए निशाना बना रहा, ताकि उसकी मदद के लिए बाहर से रसद न आ सके। राजधानी कीव और हथियाए गए पूर्वी डानबास प्रांत के बीच का संपर्क तोड़? की कोशिश भी हो रही है। बेलारूस की राजधानी मिंस्क में 2014-15 में हुए जिस युद्धविराम समझौते का पालन करने का पुतिन बार-बार जिक्र करते रहे, उसे उन्होंने खुद ही तोड़ दिया। अब वह यूक्रेन की कमर तोड़कर वहां बेलारूस जैसी कठपुतली सरकार बनाना चाहते हैं। पुतिन का कहना है कि यूक्रेन को लेनिन ने बनाया था और वह हमेशा से रूस का हिस्सा रहा है, जबकि इतिहास बताता है कि यूक्रेन रूस की अपेक्षा बहुत पुराना देश है। 11वीं सदी में यूक्रेन को कीव रूस के नाम से जाना जाता था। जारशाही के समय और सोवियत संघ के 70 सालों को छोड़ यूक्रेन या तो स्वतंत्र रहा या दूसरे साम्राज्यों का हिस्सा। यूक्रेन के मामले में पुतिन की मंशा शुरू से ही खतरनाक रही है। पूर्व में डानबास, दक्षिण में क्रीमिया के अलावा दक्षिण पश्चिमी पड़ोसी देश माल्दोवा की यूक्रेन की सीमा से लगने वाली पतली सी पट्टी ट्रांसनिस्ट्रिया पर भी 1992 से रूस समर्थक अलगाववादियों का कब्जा चला आ रहा है। रूसी सेना की एक टुकड़ी वहां तैनात है। संयुक्त राष्ट्र के कई प्रस्तावों के बावजूद पुतिन ने वहां से सेना नहीं हटाई। इस तरह रूस ने यूक्रेन को अब चारों दिशाओं से घेर रखा है। इसलिए नाटो के सुरक्षा कवच के बिना यूक्रेन का स्वतंत्र और स्थिर रह पाना अब कठिन लगता है। यूक्रेन में 15 परमाणु संयंत्र हैं। सबसे बड़ा जैफरीजिया प्रांत में है, जिसकी सीमा पूर्वी डोनेस्क प्रांत से लगती है। यदि यह परमाणु संयंत्र बमबारी की चपेट में आया तो चेर्नोबिल जैसी दुर्घटना भी हो सकती है, जो समूचे पूर्वी यूरोप के लिए एक भीषण त्रासदी साबित होगी। नाटो देश अभी केवल रूस पर आर्थिक प्रतिबंध और कड़े करने की बातें ही कर रहे हैं, पर रूसी सेनाएं यूक्रेन के सैनिक और राजनीतिक संस्थानों को खत्म करने के लिए आगे बढ़ रही हैं। अब यूक्रेन को नाटो की सदस्यता देना रूस के साथ सीधी टक्कर लेना होगा, जिसके लिए न तो अमेरिका तैयार लग रहा और न बाकी नाटो देश। क्या नाटो देश उसी तरह जंग में कूदेंगे, जैसे 1999 में कोसोवो की मदद के लिए सर्बिया के विरुद्ध कूदे थे? नाटो के मैदान में उतरे बिना मात्र आर्थिक प्रतिबंधों से रूसी सेना रुकती नहीं दिखती। क्या केवल आर्थिक प्रतिबंधों की मार पुतिन को रोकने के लिए काफी होगी? रूस का शेयर बाजार बुरी तरह गिरा है और रूबल की कीमत न्यूनतम बिंदु पर पहुंच गई है। इससे महंगाई बढ़ेगी और हो सकता है कि रूस के कुछ बैंक दिवालिया हो जाएं। अमेरिका और यूरोप ने अपने वित्त और कर्ज बाजारों को रूस के लिए बंद करने के कदम उठाए हैं। जर्मनी ने रूस की नई गैस पाइपलाइन को चालू करने की अनुमति न देने का एलान किया है, पर रूस के तेल और गैस निर्यात पर पाबंदी की बात नहीं की जा रही है। रूस तीसरा सबसे बड़ा तेल और दूसरा सबसे बड़ा गैस निर्यातक है। यूरोप की 40 प्रतिशत गैस रूस से आती है। जर्मनी, इटली और स्वयं यूक्रेन गैस के लिए रूस पर निर्भर है। बिना प्रतिबंधों के ही तेल की कीमतें सौ डालर पार कर चुकी हैं और गैस के दाम तिगुने हो चुके हैं। तेल और गैस निर्यात पर प्रतिबंध लगाए बिना पुतिन को चोट नहीं पहुंचाई जा सकती, लेकिन प्रतिबंध लगाने से पहली चोट अमेरिका और यूरोप को लगेगी। यूरोप के देश अब रूस पर अपनी ऊर्जा निर्भरता कम करने के बारे में गंभीरता से सोचने लगे हैं। पिछले बजट में केंद्र सरकार ने देश में सौ नए सैनिक स्कूल खोलने की घोषणा की थी। इसके लिए पीपीपी यानी निजी-सरकारी भागीदारी माडल के तहत सरकार ने इस साल 22 जनवरी तक राज्य सरकारों, ट्रस्टों एवं एनजीओ से आवेदन आमंत्रित किए थे। देश भर से मात्र 230 आवेदन इस प्रक्रिया के तहत प्राप्त हुए। ध्यान देने वाला पक्ष यह है कि 13 प्रांतों एवं केंद्र शासित प्रदेशों ने इसमें कोई रुचि प्रदर्शित नहीं की है। सवाल यह है कि नए सैनिक स्कूल खोलने की योजना पर देश में इतनी कमजोर प्रतिक्रिया क्यों दर्ज की गई है? केंद्र सरकार खुद अपने संसाधनों से देश के हर जिले में सैनिक स्कूल क्यों नहीं खोल सकती है? भले ही यह कार्य चरणबद्ध तरीके से ही किया जाए। पीपीपी मोड़ का विकल्प भी बेहतर है, लेकिन यह उतना व्यावहारिक नहीं है।

हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि भारत को आंतरिक एवं बाहरी सुरक्षा के लिए खतरा अन्य राष्ट्रों की तुलना में अधिक है। देश की संपत्ति की सुरक्षा तक के लिए सरकारों को सार्वजनिक अपील करनी पड़ती है। जिस तरह से राष्ट्र दशकों से आतंकवाद के दंश को भोग रहा है वह हमारे नागरिकों की संलिप्तता के बिना संभव नहीं है। संविधान सभा के सदस्य डा. हृदयनाथ कुंजरू ने 1959 में सैनिक शिक्षा को देश में अनिवार्य करने की वकालत की थी ताकि भारतीय युवा न केवल स्वस्थ्य हों, बल्कि वे देशसेवा के लिए सदैव मानसिक रूप से तैयार रहें। दुर्भाग्य यह कि स्वतंत्रता के बाद नागरिकों में देशभक्ति और अनुशासन सिखाने के मामले में सरकारें भी पूरी तरह से उदासीन रहीं। असल में संवैधानिक रूप से ही नागरिक जीवन में देशभक्ति को अनिवार्यता के धरातल पर नहीं कसा गया। इसीलिए कहीं- कहीं तो सुरक्षाबलों और सेना पर लोग खुलेआम पथराव को अपना अधिकार मानने लगे हैं। मौजूदा राजनीतिक वातावरण में भी केवल नागरिक अधिकारों एवं तुष्टीकरण की ही बातें हो रही हैं। हमारे संविधान का अनुच्छेद 51-ए (डी) कहता है कि प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र सेवा और रक्षा के लिए तत्पर रहे। सवाल यह कि क्या हम राष्ट्र रक्षा के लिए सक्षम नागरिक निर्माण की पर्याप्त व्यवस्था पिछले 75 वर्षों में विकसित कर पाए हैं? दुनिया के करीब 80 देशों के स्कूली पाठयक्रमों में सैनिक शिक्षा के अलग-अलग प्रविधान हैं। इजरायल जैसे देशों में तो अनिवार्य सैनिक शिक्षा की व्यवस्था है, जबकि 135 करोड़ की आबादी वाले भारत में महज पांच मिलिट्री स्कूल और 33 सैनिक स्कूल ही संचालित हैं। इन स्कूलों में केवल तीन हजार बच्चों को प्रवेश मिलता है। केंद्र सरकार ने बीते वर्ष केवल 60.51 करोड़ रुपये की राशि ही इन स्कूलों के लिए आवंटित की थी। पांच मिलिट्री स्कूलों के लिए तो यह राशि महज 6.17 करोड़ रुपये ही थी। जबकि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को केंद्र सरकार से 1001 करोड़ रुपये और जेएनयू को करीब 380 करोड़ रुपये प्राप्त हुए थे। इन दोनों विश्वविद्यालयों में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर क्या कुछ होता रहता है, यह किसी से छिपा नहीं। सैनिक और मिलिट्री स्कूलों से निकलने वाले छात्र न केवल सेना में सेवा को प्राथमिकता देते हैं, बल्कि अन्य मोर्चों पर भी अपनी प्रभावोत्पादक एवं जवाबदेही की छाप छोड़ते हैं। सैनिक स्कूल से निकलने वाले अधिकतर छात्र सेना को अपने करियर के तौर पर प्राथमिकता देते हैं। सैनिक स्कूल को सेना का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है। सैनिक स्कूलों ने सशस्त्र सेनाओं में अब तक 7000 से अधिक अधिकारियों की भर्ती में अपना योगदान दिया है। एक यह तथ्य भी है कि आज सेना में काबिल अफसरों की बड़ी कमी है। सैनिक स्कूलों की संख्या बढ़? से इस समस्या का दीर्घ अवधि में निराकरण संभव है। एक महत्वपूर्ण बदलाव मोदी सरकार के आने के बाद यह भी हुआ है कि अब सैनिक स्कूलों में लड़कियां भी इस साल से प्रवेश पा सकेंगी। फिलहाल सैनिक स्कूलों का समग्र संचालन सैनिक स्कूल सोसायटी के पास सुरक्षित है। निजी क्षेत्र के स्कूलों के साथ आने के बाद इनकी गुणवत्ता को कायम रखना भी चुनौती होगी। फीस और दूसरे व्यावहारिक पक्षों को लेकर सरकार को गंभीरता से सोचने होगा। यदि पीपीपी मोड़ वाले नए स्कूल पब्लिक स्कूलों की तरह ही कमाई का जरिया बन जाते हैं तो जिस उद्देश्य के साथ यह प्रयोग अमल में लाया जा रहा है वह नाकाम हो जाएगा। भारत को भी यूक्रेन जैसे संकट से सुरक्षित रहने के लिए एक तो रक्षा क्षेत्र में रूस पर निर्भरता कम करनी चाहिए और दूसरे, ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के बारे में युद्ध स्तर पर काम करना चाहिए। रूस के हमले ने भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती कूटनीति के क्षेत्र में खड़ी की है। रूस ने कूटनीतिक संकटों की घड़ी में भारत का साथ दिया है। भारत की आधे से अधिक रक्षा सामग्री भी रूस से ही आती है। दूसरी तरफ अमेरिका भारत की सामरिक रणनीति का मुख्य स्तंभ बन चुका है। यूरोप और अमेरिका भारत के सबसे बड़े व्यापार साझीदार हैं। लोकतंत्र और मानवीय मूल्यों के मामले में भी रूस की अपेक्षा यूरोप-अमेरिका भारत के अधिक निकट हैं, पर अब रूस और अमेरिका-यूरोप आमने-सामने हैं और दोनों भारत से समर्थन की उम्मीद रखते हैं। 2014 में क्रीमिया को हड़पने के मामले में भारत ने यह कहते हुए पल्ला झाड़ लिया था कि क्रीमिया के साथ 'रूस के वाजिब हित' जुड़े हैं। अमेरिका-यूरोप ने भारत की इस टिप्पणी को पचा लिया और पुतिन ने इसे अपना समर्थन मानकर भारत का धन्यवाद किया, लेकिन यूक्रेन जैसे किसी स्वतंत्र देश के राजनीतिक-सैनिक तंत्र को ध्वस्त कर अपनी कठपुतली बनाने के काम का भारत सैद्धांतिक रूप से समर्थन नहीं कर सकता।

कारोबारी परिवेश निर्माण के साथ आगे बढ रही उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था

किसी भी राज्य की प्रगति इस तथ्य पर आधारित होती है कि राज्य के पास कितनी पोटैंशियल (यानी राज्य के पास कितनी प्राकृतिक, भौतिक और मानवीय संपदा) है और लीडरशिप का विजन व उसकी प्रबंधन क्षमता कितनी है। अगर हम उत्तर प्रदेश की बात करें तो वर्ष 2017 से ठीक पहले के लगभग तीन दशकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, आर्थिक विकास और अर्थव्यवस्था के वितरण में कुशलता, दक्षता और समयबद्ध परिणाम देने की प्रक्रिया के साथ-साथ पारदर्शिता की बेहद कमी रही। परिणाम यह हुआ कि इन दशकों में राज्य उत्तरोत्तर गैर विकासवादी प्रतिस्पर्धा की ओर बढ़ा, फलत बुनियादी ढांचा और विकास नेपथ्य में चला गया, परंपरागत उद्यम मृतप्राय हुआ और सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योग सेक्टर बीमार हुआ, कृषि तकनीकी उनन्यन से वंचित हुई, बेरोजगारी और गरीबी बढ़ी जिससे सामाजिक संरचना में तमाम विभाजक रेखाएं खिंच गईं। प्राकृतिक, भौतिक और मानव संपदा से संपन्न उत्तर प्रदेश बीमारू राज्य की श्रेणी में पहुंच गया। वैश्वीकरण ने विकास का एक नया माडल दिया था जिसमें 'ट्रिकल डाउन विकास को नीचे तक पहुंचाने का सबसे बेहतर उपकरण करार दिया गया। लेकिन हुआ क्या 'बाटम आफ पिरामिड तक विकास तो पहुंचा ही नहीं, बीच में ही अवशोषित कर लिया गया। फिर समरसता कहां से आती प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'जैम (जनधन-आधार मोबाइल) माडल ने सरकार की सब्सिडी की लीकेज को रोक दिया। डीबीटी यानी डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर की व्यवस्था ने सीधे उसे ही लाभ पहुंचाया जो इसका हकदार था। परिणामस्वरूप 'बाटम आफ पिरामिड नई शक्ति हासिल करने लगा। उत्तर प्रदेश इस व्यवस्था में देश के अंदर सबसे आगे रहा। स्वाभाविक है कि अन्य राज्यों की तुलना में उत्तर प्रदेश में उन लोगों की संख्या कहीं ज्यादा होगी जो 'जैम ट्रिनिटीऽ से लाभान्वित हुए। इसके माध्यम से राज्य में करोड़ों लोगों को अनेक प्रकार से लाभ मिला। बहुत से अध्ययन बताते हैं कि उत्तर प्रदेश के पास प्रदेश के पास एक बड़ा बाजार है और कुशल मानव पूंजी है। वर्ष 2017 के बाद प्रदेश सरकार ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश में बुनियादी ढांचा एवं संपर्क, कानून एवं व्यवस्था, निवेश आकर्षण तथा कारोबारी परिवेश के निर्माण की दिशा में अभूतपूर्व कदम उठाए। ईज आफ डूइंग बिजनेस उत्तर प्रदेश की रैंकिंग का 14वें पायदान से दूसरे पायदान तक पहुंचना इसका प्रमाण है। इसी के फलस्वरूप उत्तर प्रदेश के प्रति व्यवसायियों व निवेशकों की अवधारणा बदली और यह प्रदेश बीमारू से संभावनाओं की भूमि बना। दरअसल इसकी वास्तविक नींव मुख्यमंत्री ने इन्वेस्टर्स समिट (फरवरी 2018) में ही रख दी थी जिसमें देश भर के उद्यमी एवं निवेशक शामिल हुए और 4.68 लाख करोड़ रुपये के मेमोरेंडम आफ अंडरस्टैंडिंग्स (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए थे। इससे पहले ही औद्योगिक नीति 2017 के माध्यम से विकास की दिशा स्पष्ट

कर दी गई जिसे बाद में इन्वेस्ट यूपी के माध्यम से प्रक्रिया को सरल, पारदर्शी, समयबद्ध (टाइमबाउंड) और जवाबदेह बनाकर गति प्रदान की गई। इससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था के लिए एक ऐसा परिवेश निर्मित हुआ जो अर्थव्यवस्था को प्रगतिशील बनाने के साथ-साथ तेजी से आगे बढ़? की ओर ले जाने के लिए समर्थ था। इसका परिणाम सामने है। एक बात और आर्थिक विकास में धारणीयता हो तीव्रता हो और समावेशिता हो, यह संतुलित विकास के लिए जरूरी होता है। इस दिशा में ग्रामीण स्वास्थ्य, ग्रामीण कल्याण और ग्रामीण विकास में आधारभूत परिवर्तन एवं तेजी लाने की जरूरत थी, क्योंकि जब तक सामाजिक-आर्थिक विकास एवं कल्याण की स्थापना नहीं होगी, तब तक ऐसी बहुत सी विभाजक रेखाएं समाप्त नहीं होंगी, जो विकास में बाधक थीं। जब तक सामाजिक स्वरूप में परिवर्तन नहीं होगा, समाज अर्थव्यवस्था के विकास के मामले में प्रतिस्पर्धी नहीं हो पाएगा। यह बदलाव हुआ, जिसे आज स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जैसे-जिन गरीबों को पक्का मकान मिला उसने पात्र व्यक्तियों को मकान के साथ साथ आत्मनिर्भर बनने का अवसर दिया और बाजार की मांग को तेज कर आपूर्ति पक्ष को उत्पादन के लिए प्रेरित किया। इससे मल्टीपल स्तर पर रोजगार का सृजन व आय में वृद्धि निहित होती है। राज्य सरकार ने यदि दर्जनों अधूरी सिंचाई योजनाओं को पूरा कर 22 लाख अतिरिक्त सिंचन क्षमता का सृजन किया उससे कृषकों को मुफ्त पानी मिला। यानी उसका ईंधन पर होने वाला व्यय बचा, उसका श्रम और समय बचा तथा समय पर सिंचाई के लिए मिले पर्याप्त पानी ने कृषि पर लागत कम करने के साथ-साथ किसान की आय में वृद्धि की। केंद्र और प्रदेश सरकार द्वारा 15 करोड़ लोगों को महीने में दो बार राशन दिया गया। इसने परिवारों की भूख की चिंता को समाप्त कर दिया। इसके साथ ही, यदि एक करोड़ वृद्धजनों, निराश्रित महिलाओं और दिव्यांगजनों को 12 हजार रुपये सालाना दिया जा रहा है तो स्वाभाविक रूप से यह उनके जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं पर खर्च होता होगा। विभिन्न प्रकार की सहायता योजनाओं के तहत प्रदेश के नागरिकों को दी गई सहायता राशि ने एक तरफ उनके जीवन को खुशहाल और चिंतामुक्त बनाने का काम किया तो दूसरी तरफ बाजार की मांग-आपूर्ति चेन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यही कारण है कि जब कोरोना कालखंड में अन्य राज्यों में मांग और आपूर्ति चेन लड़खड़ाई, उद्यम बंद हुए और लोग बेरोजगार हुए, तब उत्तर प्रदेश सभी के बीच संतुलन साधते हुए तेजी से आगे बढ़ता रहा। पिछले कुछ दशकों पर नजर डालें तो उत्तर प्रदेश में पर्यटन अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में बहुत पीछे चला गया था। योगी सरकार ने अयोध्या में दीपोत्सव एवं प्रयागराज में भव्य एवं दिव्य कुंभ का आयोजन कर उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक-आध्यात्मिक अर्थव्यवस्था की एक नई शुरूआत की। संस्कृति और अध्यात्म आधारित अर्थव्यवस्था आने वाले समय में केवल अर्थव्यवस्था में ही मल्टीप्लायर की भूमिका नहीं निभाएगी, बल्कि ईज आफ लिविंग और हैपीनेस का मूलभूत आधार साबित होगी। इस दृष्टि से देखें तो पिछले पांच वर्षों में उत्तर प्रदेश में अर्थव्यवस्था के जिस माडल को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विकसित किया है, उसमें अंत्योदय संबंधी ध्येय पथ तो है ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आध्यात्मिक-सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था और हैपीनेस का मंत्र तथा 'आत्मनिर्भरताऽ की कुंजी भी है।

मणिपुर विधानसभा चुनाव में नदी संरक्षण का मसला

एक जुलाई 2022 से पूरे देश में सिंगल यूज यानी केवल एक बार उपयोग में आने वाले प्लास्टिक के उपयोग पर पाबंदी के नए आदेश से मणिपुर की राजधानी इंफाल की एक नदी की जान में जान आई है। दरअसल हर बार चुनाव के

समय हर राजनीतिक दल बेशुमार कचरे के कारण मौत के कगार पर खड़ी इंफाल की एक नदी के संरक्षण का मसला जरूर उठाते हैं, लेकिन जमीन पर कभी कुछ होता दिखा नहीं। मणिपुर की राजधानी इंफाल में 'मां का बाजारऽ दुनिया में एक अनूठा व्यावसायिक स्थल है जहां केवल महिलाएं ही दुकानें चलाती हैं। सदियों पुराने इस बाजार में लगभग पांच हजार महिलाओं का व्यवसाय है। बीते दो दशकों के दौरान जिस वस्तु ने खरीदारी करने वालों को सामान ले जाने के लिए सुविधा दी, वही आज इस बाजार और इससे सटी नांबुल नदी के अस्तित्व पर संकट का कारण बन रही है। इस बाजार में आने वाली फल-सब्जी का उत्पादन इस नदी के जल से होता है। नदी के जल की सहज धारा कभी यहां के परिवेश को मुग्ध करती थी। आज इस नदी में जल के स्थान पर केवल पालीथीन, पानी की बोतलें व अन्य प्लास्टिक पैकिंग सामग्री का अंबार दिखता है। यह नदी आगे चल कर विश्व के एक मात्र तैरते नेशनल पार्क व गांवों के लिए प्रसिद्ध लोकटक झील में मिलती है और जाहिर है कि नदी के जहर का कुप्रभाव इस झील पर भी पड़ रहा है। वर्ष 2019 में नांबुल नदी के कायाकल्प और संरक्षण के शुभारंभ ने नदी के प्रदूषण स्तर को कुछ हद तक कम करने में मदद की है, लेकिन आज भी यह देश की सबसे दूषित नदियों में शामिल है। विदित हो कि सीपीसीबी यानी केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने पांच अलग-अलग प्राथमिकता के आधार पर देश की 351 नदियों को अत्यधिक प्रदूषित के रूप में पहचाना था, जिसमें मणिपुर की नौ नदियों को सूचीबद्ध किया गया था, उनमें नांबुल एक है। अकेले इंफाल से हर दिन लगभग 12 टन कूड़ा निकलता है और इसके निबटारे की कोई माकूल व्यवस्था है नहीं। या तो इस कूड़े को शहर के बाहर पहाड़ी क्षेत्रों में फेंक दिया जाता है या फिर शहर के बीच से गुजरती नांबुल नदी में डाल दिया जाता है। लगातार कूड़ा फेंकने से जब शहर में नदी ढंक गई तो स्थानीय प्रशासन ने 2018 में पर्यावरण संरक्षण अधिनियम के अंतर्गत शहर में 50 माइक्रान से कम मोटाई की पालीथीन पर पाबंदी लगा दी। हालांकि स्थानीय लोगों ने नए नियमों का पालन शुरू किया, परंतु बाहरी लोग ऐसा कम ही करते दिखते हैं। इस बार के चुनाव में पालीथीन पर सख्ती से पाबंदी, नदी की सफाई और शहर से निकलने वाले कूड़े के वैज्ञानिक तरीके से निस्तारण जैसे मसले सबसे आगे हैं। बाजार चलाने वाली महिलाएं इस पर सबसे ज्यादा मुखर हैं और हर राजनीतिक दल इसके निराकरण के वादे अपने घोषणा पत्र में कर रहा है। एक स्थानीय सर्वेक्षण से पता चला है कि इंफाल शहर में साल दर साल सांस के रोगियों की संख्या बढ़ रही है और इसके मूल में भी प्लास्टिक कचरा ही है। यह बात अब सबको खटक रही है कि इंफाल में पेयजल के मुख्य स्रोत नांबुल नदी 10 किमी के अपने रास्ते में नदी के रूप में दिखना ही बंद हो गई है। केवल यह नदी ही नहीं, इसके अलावा राज्य की अन्य आठ नदियों की भी कमोबेश यही दशा है। यानी आज मणिपुर की नदियां अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं और जागरूक लोग इसे मतदान के दवाब से बचाने का प्रयास कर देश के सामने सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। इससे एक बड़ा विमर्श यह भी खड़ा हो सकता है कि मणिपुर के लोग जल संरक्षण के मसले को प्राथमिकता देते हैं, जैसाकि उत्तर भारत के तमाम राज्यों में कम ही दिखता है।

संक्षिप्त समाचार

रूस ने यूक्रेन पर हमला कर बता दी अमेरिका समेत यूरोपीय देशों को उनकी औकात

नई दिल्ली । रूस पूरी तरह से यूक्रेन के खिलाफ युद्ध का एलान कर चुका है, अब आगे क्या होगा ये एक ऐसा सवाल है जिसका जवाब जानने के लिए हर कोई उत्सुक है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि इस लड़ाई का कोई एक पक्ष नहीं है। इसमें जहां अमेरिका को फैसला लेना है वहीं भारत को भी फैसला करना होगा। इसके अलावा दूसरे देशों को भी ऐसा ही निर्णय लेना होगा। एक और सवाल यहां पर बेहद खास है और वो ये कि कहीं ये तीसरे विश्व युद्ध की आहट तो नहीं है। ये सभी सवाल एक-दूसरे से काफी हद तक जुड़े हुए हैं। इसलिए इनका जवाब तलाशना भी बेहद जरूरी है। विदेश मामलों के जानकार और जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर पुष्पेश पंत का मानना है कि रूस ने अपना आक्रामक रूप दिखाकर न सिर्फ पश्चिम देशों को बल्कि समूचे यूरोप और खुद को दुनिया की महाशक्ति बताने वाले अमेरिका को उसकी औकात बता दी है। यूक्रेन पर रूस द्वारा हमला करने के बाद भले ही अमेरिका और दूसरे पश्चिमी देशों ने उस पर प्रतिबंध लगा दिए हैं लेकिन इससे कुछ होने वाला नहीं है। इससे केवल उनको ही नुकसान होने वाला है। अमेरिका के पास इससे अधिक कोई दूसरा विकल्प है भी नहीं। प्रोफेसर पंत का ये भी कहना है कि रूस और यूक्रेन के बीच हालात भले ही कैसे भी दिखाई दे रहे हो लेकिन ये विश?व युद्ध में तब्दील नहीं होने वाला है। यूरोप में फ्रांस और जर्मनी दो बड़ी अर्थव्यवस्थाएं हैं। रूस की नार्ड स्ट्रीम 2 पाइप लाइन को रोककर भी कुछ नहीं होने वाला है। हालांकि ये सही है कि इस पर रूस ने अरबों डालर का निवेश किया है।

नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मादक पदाथी मे लिप्त लोगो को जागरूक किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । सेक्टर-125 एमिटी विश्वविद्यालय में नोएडा पुलिस के सहयोग से नशा जागरूकता

कार्यशाला आयोजित की गई। पुलिस ने विद्यार्थियों को मादक पदार्थों के सेवन के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी। इस मौके पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम मादक पदार्थों के नुकसान के बारे में जानकारी दी गई। एडीसीपी रणविजय सिंह ने कहा कि मैं स्वयं ऐसी घटनाओं का साक्षी रहा हूं, जिसमें नशे की लत ने व्यक्ति को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। मादक पदार्थ चाहे किसी भी रूप में लिए जाएं, वे शरीर के लिए हानिकारक हैं। यह मनुष्य के व्यक्तिगत, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करता है। अपने आसपास को लोगों को नशे से दूर रहने की सलाह दें। नोएडा पुलिस मादक पदार्थों के रोकथाम के लिए लगातार काम कर रही है। इसके लिए कई टीमें काम कर रही है। इस मौके पर एमिटी विश्वविद्यालय के एंटी नारकोटिक्स कमेटी के चेयरमैन लेफ्टिनेंट जनरल एस के गिडिऑक, डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ. मार्शल साहनी मौजूद रहे। अस्मिता थियेटर ग्रुप के छात्रों ने मादक पदार्थों के नुकसान को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रस्तुत किया।

चलती कार में लगी आग, चालक ने कूदकर बचाई जान

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । सेक्टर-93 में गुरुवार दोपहर को चलती कार में अचानक आग लग गई। चालक ने कार से कूदकर अपनी जान बचाई। इससे वहां से गुजर रहे लोगों में हड़कंप मच गया। सूचना मिलने पर दमकल विभाग की गाड़ी मौके पर पहुंची। दमकलकर्मियों ने काफी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आग लगने से कार पूरी तरह जल गई। फेज-2 थाना क्षेत्र के सेक्टर-93 महामाया फ्लाईओवर की तरफ से चालक कार में आ रहा था। इसी दौरान कार में अचानक आग लग गई। आग कार के बोनट से शुरू हुई। चालक ने कार से कूदकर अपनी जान बचाई। चलती कार में आग लगने से राहगीरों में हड़कंप मच गया। फिर दमकल विभाग को हादसे की सूचना दी। सूचना मिलने के बाद दमकल की गाड़ी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया। हादसे में कार पूरी तरह जल गई थी।

छात्रों के मिड डे मिल का पैसा डकार गए स्कूल खातों में गड़बड़ी और केवाईसी का बहाना बना रहे शिक्षक नोटिस जारी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को सुविधा के लिए शासन नई योजनाएं शुरू कर रहा है, लेकिन जिले के अधिकारी योजना की हवा निकाल रहे हैं। जिले के कई विद्यालय ऐसे है, जिन्होंने लॉकडाउन में मिले छात्र-छात्राओं के मिड डे मिल का भत्ता अबतक उनके खातों में नहीं पहुंचाया है। जिला विद्यालय निरीक्षक इस मामले में दो दिनों में दो एडेड स्कूल के प्रधानाचार्य को कारण बताओ नोटिस जारी कर चुके हैं। उधर, यूनिफॉर्म के लिए डीबीटी कार्य भी स्कूलों में पूरा नहीं है। जिससे बेसिक शिक्षा विभाग के अफसरों की कार्यप्रणाली पर भी सवाल खड़े होने लगे हैं। जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह ने बृहस्पतिवार को जनता इंटर कॉलेज रोजा याकूबपुर का निरीक्षण किया। यह अशासकीय सहायता प्राप्त विद्यालय है। जांच पड़ताल में सामने आया कि विद्यालय को कक्षा छह से आठ तक के विद्यार्थियों के लिए लॉकडाउन की अवधि का मिड डे मिल (एमडीएम) का 5.18 लाख रुपए भेजे गए थे, जो कि प्रधानाचार्य ने अभी तक विद्यार्थियों के खातों में नहीं भेजे हैं। बीते दिवस गेझा-भंगेल स्थित नवजीवन इंटर कॉलेज में भी उन्होंने निरीक्षण के दौरान गड़बडी पकड़ी थी। कॉलेज के प्रधानाचार्य को एमडीएम भत्ते के 4.52 लाख रुपए दिए गए थे, लेकिन उन्होंने किसी भी विद्यार्थी को अभी तक पैसा नहीं दिया है। साथ ही विद्यालय में यूनिफॉर्म के 1100 रुपए मिलने के लिए डीबीपी का कार्य भी पूरा नहीं है। दो विद्यालयों में यह गड़बड़ी पकड़ में आने के

बाद जिला विद्यालय निरीक्षक ने अन्य एडेड स्कूलों की जांच भी शुरू कर दी है। सबसे ज्यादा गड़बड़ी एडेड स्कूलों में ही मिल रही है। डीआईओएस ने जनता इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य को इस संबंध में कारण बताओ नोटिस भेजकर जवाब मांगा है। मौके पर पूछताछ के दौरान दोनों विद्यालयों के प्रधानाचार्यों ने इसके पीछे का कारण विद्यार्थियों के खातों में गड़बड़ी और केवाईसी न होना बताया है। बताया कि विद्यार्थियों के अभिभावकों के खाते आधार से लिंक न होने के कारण उनके खातों में पैसा भेजना मुश्किल हो रहा है। वहीं, इस बाबत कई बार अभिभावकों को खातों में सुधार के लिए कहा गया है, लेकिन सुधार नहीं हो रहा। उन्होंने कार्यो को जल्द पूरा करने की भी दुहाई दी है। कक्षा आठ तक के विद्यालय बेसिक शिक्षा विभाग के अधीन है, लेकिन बीएसए के स्तर से मामले में कोई कार्रवाई नहीं की गई है। वहीं, अभी तक उन्होंने एक भी विद्यालय में गड़बड़ी पकड़ने के लिए निरीक्षण नहीं किया है। विभागीय अफसर कागजों में तो विद्यार्थियों को लाभ पहुंचाने का दावा कर रहे है, लेकिन जमीनी हकीकत कुछ ओर ही बयां कर रही है जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह ने कहा, 'स्कूलों में लगातार निरीक्षण कर व्यवस्था परखी जाएगी। बिना बताए अवकाश पर रहने वाले शिक्षकों व कार्यो में लापरवाही करने वाले प्रधानाचायी को नोटिस के साथ वेतन रोकने संबंधी कार्रवाई भी की जाएगी। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी धर्मेंद्र सक्सेना ने कहा, 'मिड डे मिल के जिला समन्वयक से मामले में जानकारी उपलब्ध कराने के आदेश दिए है। सभी विद्यालयों की पड़ताल की जाएगी। जल्द ही सभी छात्रों को लाभ पहुंचा दिया जाएगा।

मोबाइल दुकान का शटर उखाड़ कर बदमाशो ने की चोरी

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । देवला गांव स्थित मोबाइल की दुकान का शटर उखाड़कर बदमाशों ने 25 हजार रुपये नकद, 40 नए मोबाइल और अन्य सामान चोरी कर लिया। दुकानदार सुबह दुकान पर पहुंचा तो चोरी के बारे में पता चला। उसने मामले की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। देवला गांव में राजीव कुमार की आरके मोबाइल के नाम से दुकान है। चोरों ने रात मे दुकान का शटर उखाड़कर चोरी की घटना को अंजाम दिया। चोर दुकान से मोबाइल, नगदी, लैपटॉप, टेबलेट आदि सामान चोरी कर ले गए। राजीव रोजाना की तरह सुबह दुकान पर पहुंचे तो चोरी के बारे में पता चला। पीडित ने तुरंत घटना की सूचना पुलिस को दी। सूरजपुर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और छानबीन की। कोतवाली प्रभारी अवधेश प्रताप सिंह ने बताया कि पीडित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज से चोरों के बारे में पता लगाने का प्रयास कर रही है। चोरों को गिरफ्तार कर घटना का खुलासा किया जाएगा।

पुलिस चौकी के सामने आत्मदाह करने वाली महिला देवर पर किया केस

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । एनएसईजेड पुलिस चौकी के पास खुद को आग लगाकर महिला द्वारा आत्मदाह का प्रयास करने के मामले में पुलिस ने पीडिता के देवर के खिलाफ केस दर्ज किया है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने उसके घर पर दबिश दी है। हालांकि घटना के बाद से आरोपी फरार है। एनएसईजेड चौकी के सामने गांव इलाहबास गांव की विवाहिता ने मंगलवार दोपहर को अपने ऊपर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा ली थी। पुलिसकर्मियों ने आग को बुझाकर उसे कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया था। महिला की हालत गंभीर होने पर महिला को दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया था। महिला का आरोप है कि उसका देवर सुमित और नीरज उसे गांव में बदनाम कर रहे थे। दोनों पर अभद्रता करने का भी आरोप लगाया था। इसको लेकर महिला ने 20 फरवरी को पुलिस को शिकायत दी थी। आरोप है कि पुलिस ने मामले में कोई कार्रवाई नहीं की। इससे परेशान होकर महिला ने चौकी के सामने आत्मदाह का प्रयास किया था। थाना प्रभारी ने बताया कि मामले में महिला के देवर के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीमें लगी हुई हैं। पुलिस जल्द ही उसे गिरफ्तार करेगी। वहीं दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उपचाराधीन महिला की हालत स्थिर बनी हुई है। थाना प्रभारी ने बताया कि अभी महिला ठीक है। उसका उपचार किया जा रहा है। हादसे में महिला के शरीर का करीब 40 फीसदी हिस्सा जल गया था।

लापरवाही पर दो स्कूलों के प्रधानाचार्यो को कारण बताओ नोटिस

जिला विद्यालय निरीक्षक ने नवजीवन व भवानी शंकर इंटर कॉलेज का किया औचक निरीक्षक

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा । जिले के दो माध्यमिक स्कूलों के प्रधानाचार्यो को लापरवाही करना भारी पड़ गया है। जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह ने लापरवाही समाने आने के बाद स्कूलों के प्रधानाचार्यो को कारण बताओ नोटिस जारी कर जल्द जवाब तलब किया है। जवाब न देने पर विभागीय कार्रवाई करने की भी चेतावनी दी गई है। जानकारी के अनुसार बुधवार को जिला विद्यालय निरीक्षक डॉ. धर्मवीर सिंह ने बुधवार को गेझा-भंगेल स्थित नवजीवन इंटर कॉलेज का निरीक्षण किया। उन्हें विद्यालय में प्री बोर्ड परीक्षाएं आयोजित संपन्न होती मिली। वहीं पड़ताल के दौरान उन्होंने चौकाने वाला खुलासा भी किया। बताया गया कि कॉलेज के प्रधानाचार्य को काफी समय पूर्व एमडीएम भत्ते के रूप में 4.52 लाख रुपए बजट दिया था, जो अबतक उन्होंने छात्रों के अभिभावकों के खाते में नहीं भेजा है। लिहाजा वह बजट पर कुंडली मारकर बैठे हुए है, जबकि जल्द ही नया सत्र शुरू होने वाला है। वहीं, विद्यालय में कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों का डीबीटी का कार्य भी पूरा नहीं मिला। इस मामले में डीआईओएस ने प्रधानाचार्य को जमकर लताड़ लगाते हुए कारण बताओ नोटिस जारी किया है। इसके अलावा भवानी शंकर इंटर कॉलेज का भी निरीक्षण किया गया। यहां स्कूल में गणित, भूगोल, विज्ञान के कुल 153 परीक्षार्थियों में से 139 परीक्षार्थी उपस्थित मिले। कक्षा 10 में कुल 333 विद्यार्थियों में से 302 परीक्षार्थी प्री बोर्ड परीक्षा में उपस्थित मिले। इसके बाद उन्होंने शिक्षकों और कर्मचारियों के हाजिरी रजिस्टर की पड़ताल की। इस दौरान शिक्षक सुनील कुमार, राजपाल, मनीषा, चंद्रवती कला, राम प्यारे, चतुर्थ कर्मचारी राजेश कुमार अलग-अलग तिथियों में अनुपस्थित पाए गए। इस संबंध में इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य से जवाब तलब किया गया तो पता चला कि शिक्षा व कर्मचारी बिना बताए अवकाश पर रहे थे। जिनके खिलाफ उन्होंने कोई कार्रवाई नहीं की। डीआईओएस ने अनुपस्थिति रहे कर्मचारी व शिक्षक के खिलाफ वेतन रोकने के आदेश दिए। साथ ही प्रधानाचार्य को कार्रवाई न करने पर कारण बताओ नोटिस जारी किया है। डीआईओएस ने कहा कि वह लगातार स्कूलों का निरीक्षण करेंगे। गड़बड़ी करने वाले प्रधानाचार्य व शिक्षकों के खिलाफ कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

युवा कांग्रेस का घर चलो,घरघर चलोठ एवं एक बूथ,पांच यूथ कार्यक्रम का ग्राम खड्डा,गिरुई,जोरा के बूथों में सदस्यता अभियान

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल । ब्यौहारी मध्यप्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष श्री विक्रांत भूरिया जी के निर्देशन पर एवं प्रदेश सचिव व प्रभारी श्री इमरान मंसूरी जी सांथ ही श्री धीरेन्द्र मिश्रा जी एवं युवा कांग्रेस जिला अध्यक्ष श्री कराया गया और उन्हें कांग्रेस पार्टी का सदस्य बनाया सांथ ही युवाओं को ठएक बूथ - पांच यूथठ में जोडा गया। आज का कार्यक्रम युवा कांग्रेस विधानसभा सचिव अमरेन्द्र द्विवेदी जी के नेतृत्व में सम्पनन्हुआ जिसमें युवा कांग्रेस मण्डलम अध्यक्ष कमलेश कोल जी,विश्वनाथ

अनुपम गौतम जी के मार्गदर्शन में युवा कांग्रेस विधानसभा क्षेत्र ब्यौहारी क्षअध्यक्ष राबेन्द्र बैस महंत के आवाहन में आज दिनांक- 25/02/2022 को 22वाँ दिन क्षिवधानसभा क्षेत्र के ग्राम खड्डा,गिरुई,जोरा के बूथों पर जाकर घर चलो, घर-घर चलो एवं एक बूथ पांच यूथ कार्यक्रम के अंतर्गत पोलिंग बूथों में जाकर लोगों से संपर्क कर उनको कांग्रेस की रीति और नीति से अवगत प्रजापति जी,रामनिरंजन पटेल जी,मनोज कहार जी,रामसेवक पटेल जी,कमलेश्वर प्रजापति जी,राजमणि प्रजापति जी,सतेन्द्र प्रजापति जी,आदित्य तिवारी जी,रामसिया पटेल जी,सुरेन्द्र तिवारी जी,कमलेश पाण्डेय जी,हरिमोहन यादव जी,राहुल कोल जी,संजय बैस जी सहित सभी कांग्रेस जन सदस्यता अभियान में शामिल रहे।

यूक्रेन के हाथों से निकला चर्नोबिल जहां 36 वर्ष पहले हुआ था एक बड़ा परमाणु हादसा, अब रूस ने किया कब्जा जानें- इसका खौफनाक इतिहास

नई दिल्ली । रूस और यूक्रेन के बीच छिड़ी जंग के बीच एक बार फिर से चर्नोबिल परमाणु संयंत्र चर्चा में आ गया है। चर्नोबिल पर रूस के कब्जे के बाद इसके इतिहास को दोहराना भी जरूरी हो जाता है। चर्नोबिल परमाणु संयंत्र में 26 अप्रैल 1986 को एक भयानक हादसा हुआ था

जिसके बाद ये संयंत्र पूरी तरह से तबाह हो गया था। इस हादसे को की गिनती आज तक दुनियाभर में हुए बड़े औद्योगिक हादसों में की जाती है। परमाणु दुर्घटना की बात करें तो सबसे ऊपर जापान के फूकूशिमा हादसे का नाम आता है, जहां पर एक दशक पहले आई सूनामी और जबरदस्त भूक्रप ने काफी नुकसाान पहुंचाया था। चर्नोबिल की घटना उस वक्त हुई थी जब रूस को सोवियत संघ के नाम से जाना जाता था। चेनीबिल परमाणु ऊर्जा संयंत्र के चौथे रिएक्टर में गड़बड़ी आने की वजह से ये हादसा हुआ था। ये हादसा इतना जबरदस्त था कि इसमें संयंत्र की छत उड़ गई थी और काफी दूर तक इसका रेडिएशन फैल गया था। हादसे के बाद पर्यावरण को रेडिएशन फ्री करने और हादसे को बिगड़ने से रोकने के लिए तत्कालीन सोवियत संघ को करीब 5 से ।0 रुपये खर्च करने पड़े थे। इस दुर्घटना के समय प्रकार परमाणु रिएक्टर में एक स्टीम टर्बाइन में टेस्टिंग चल रही थी। तभी इसमें गड़बड़ी आ गई। कई कोशिशों के बाद भी इंजीनियर और वैज्ञानिक इसको सही नहीं कर सके। हालांकि इसके बाद भी टेस्टिंग को तत्काल नहीं रोका गया और इसको जारी रहने दिया गया। जब टेस्टिंग खत्म हो गई तो इस संयंत्र को बंद करने का फैसला लिया गया। लेकिन वो ऐसा नहीं कर सके और एक अनियंत्रित परमाणु श्रृंखला अभिक्रिया की शुरु हो गई। इसकी वजह से जरूरत से अधिक एनर्जी वहां पर रिलीज होती रही। इस एनर्जी की वजह से इसके अंदर का भाग पिघलने की स्थिति में आ गया जिससे वहां पर एक जबरदत विस्फोट हो गया। इससे पहले की कोई संभल पाता वहां पर रिएक्टर का इनर पोर्शन और रिएक्टर बिल्डिंग तबाह हो गई। इसके तुरंत बाद संयंत्र को आग की ऊंची लपटों ने घेर लिया। हादसे के करीब नौ दिन बाद तक भी हवा में रेडिएशन फैलता रहा। ये रेडिएशन पश्चिमी यूरोप तक भी पहुंच गया था। 4 मई 1986 को इसे किसी तरह से रोककर बंद किया गया। इस रेडिएशन की वजह से बेलारूस का करीब 15 किमी का इलाका प्रभावित हुआ था।इस धमाके में आधिकारिक तौर पर रिएक्टर के अंतर्भाग के विस्फोट में दो इंजीनियरों की मौत हुई थी और कुछ घायल हुए थे। लोगों को शहर से बाहर निकालने के इंतजाम किए गए। रातों-रात गाड़ियों में भरकार लोगों को यहां से बाहर सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। आग बुझाने के बाद सबसे पहले इससे निकलने वाले रेडिएशन को बंद करना बड़ी चुनौती थी। इस काम को करने के दौरान करीब डेढ़ सौ कर्मी रेडिएशन के शिकार हुए जिन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती कराया गया। इनमें से करीब 28 लोगों की मृत्यु कुछ ही दिनों में हो गई थी।` वाले रेडिएशन का असर एक दशक बाद तक भी बना रहा। इसकी वजह से यहां पर कैंसर जैसी घातक बीमारियां पनपी जिनसे लोगों की जान गई। 2011 में इसकी ही वजह से 15 बच्चों की मौत थाइराइड कैंसर से हुई थी।

पुलिस के हत्थे चढ़े हिज्बुल मुजाहिदीन के चार ओवरग्राउंड वर्कर, किश्तवाड़ में हुई गिरफ्तारा

श्रीनगर, । आतंकी संगठन हिज्बुल मुजाहिदीन के चार ओवरग्राउंड वर्कर्स को बुधवार को गिरफ्तार कर लिया गया। किश्तवाड़ में पकड़े गए इन आतंकियों के पास से दो ग्रेनेड, 120 एके 47, एके 47 के दो मैगजीन, आतंकी संगठन के पोस्टर आदि बरामद किए गए हैं। उलेखनीय है कि पिछले कुछ दिनों से कश्मीर में सक्रिय आतंकवादी संगठनों के लिए आंख-कान का काम कर रहे ओवरग्राउंड वर्करों पर सुरक्षाबलों ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है। आम लोगों के बीच रहकर आतंकवादियों तक आवश्यक व महत्वपूर्ण जानकारी पहुंचा रहे इन ओवरग्राउंड वर्करों के पहचान व गिरफ्तारी की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। इसी अभियान के तहत राज्य जांच एजेंसी (एसआइए) कश्मीर के विभिनन्

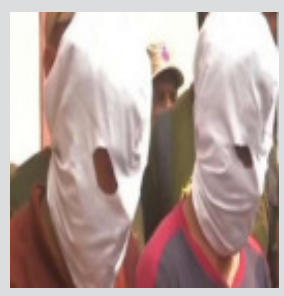

इलाकों में छापेमारी कर ओवरग्राउंड वर्करों को गिरफ्तार कर रही है। एक दिन पहले ही मंगलवार को उत्तरी कश्मीर के बारामूला जिले में पुलिस ने लश्कर-ए-तैयबा की एक शाखा टीआरएफ के दो ओवरग्राउंड वर्करों को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इस संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से विशेष जानकारी मिलने के बाद बारामूला पुलिस टीम सेना की 46 आरआर, द्वितीय बटालियन एसएसबी और 53 बटालियन सीआरपीएफ के संयुक्त दल के साथ खाचादारी जहनपोरा में पहुंचा। उन्हें जानकारी मिली थी कि कुछ आतंकवादी इलाके में कानून व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने की फिराक में हैं। इलाके में सक्रिय कुछ ओवरग्राउंड वर्करों को आतंकवादियों तक हथियार व गोलाबारूद पहुंचाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

व्यौहारी आम आदमी पार्टी नगर अध्यक्ष विरेंद्र पटेल जी ने जानकारी देते हुए बताए कि

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

शहडोल । आज समय 10 बजे की ट्रेन से प्रदेश यूथ अध्यक्ष आम आदमी पार्टी मध्य प्रदेश श्री संदीप शाह जी का आगमन ब्योहारी में होना है,सर्वप्रथम रेल्वे प्रबंधक महोदय को ज्ञापन दिया जाना है, इसके बाद भव्य स्वागत कर विश्राम गृह लाया जाना है जिसमें आप सभी के उपस्थिति रहने की अपेक्षा की जाती है विशेष मीटिंग का आयोजन कार्यालय में समय 12बजे से 12:45 तक 1:00बजे से वार्ड 12सेमारी टोला में कार्यक्रम जिसमें प्रदेश अध्यक्ष, जिला अध्यक्ष, ब्लॉक अध्यक्ष,नगर अध्यक्ष वीरेन्द्र कुमार पटेल , ब्लॉक यूथ अध्यक्ष वब्लॉक यूथ अध्यक्ष का उद्बोधन होना है इसके उपरांत ग्राम बराछ में हो रहे महीनो से किसान आंदोलन जिसमें रेत खदान का का विरोध किया जा रहा है व लीज रद्द किये जाने की मांग की जा रही है, किसानो के कार्यक्रम में उनकी समस्याओ से अवगत होना है यह सभी कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण है व आप सभी की उपस्थिति अनिवार्य है आप सभी अपने इष्ट मित्रों साहित कार्यक्रम में अवश्य पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाये आपका अपना

गुजरात हुआ कफ्र्यू मुक्त, दो साल से कोरोना बंदिशों का सामना कर रहे थे लोग

अहमदाबाद। गुजरात हुआ कफ्र्यू मुक्त कोरोना महामारी के चलते करीब दो साल से कफ्र्यू एवं महामारी एक्ट की बंदिशों का सामना कर रहे गुजरात वासियों के लिए गुरुवार कि शाम एक खुशखबरी लेकर आई। राज्य सरकार ने अहमदाबाद कोर वडोदरा शहर से भी रात्रि कफ्र्यू हटा लिया है इससे पहले आठ महानगरों समेत करीब तीन दर्जन शहरों में एवं कस्बों में रात्रि कफ्र्यू लागू था। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल की अध्यक्षता में हुई कोर कमेटी की बैठक में राज्य में कोरोना संक्रमण के हालात पर चर्चा की गई तथा महामारी के संकट से उबरने के बाद अब पहली बार सरकार ने राज्य को कफ्र्यू मुक्त

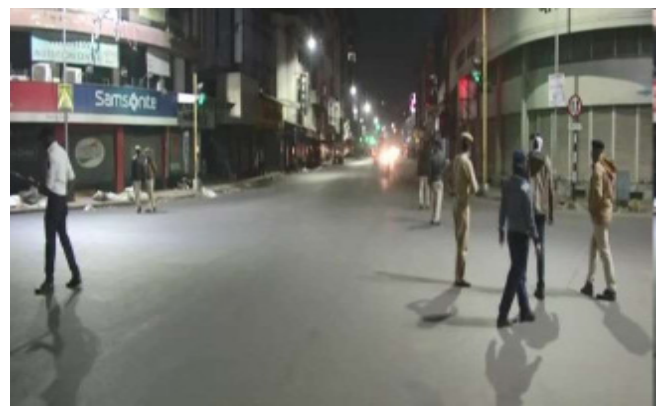

करने की घोषणा कर सरकार ने कुछ मामलों में अभी नियंत्रण रखा है। राजनीतिक सेक्शन एक सांस्कृतिक धार्मिक खेल सहित विभिन्न विवाह समारोह में खुले स्थानों पर कुल क्षमता के 75 फीसदी लोग ही भाग ले सकेंगे जबकि बंद हॉल में 50 फीसदी क्षमता के साथ ही कार्यक्रम किए जा सकेंगे। सार्वजनिक स्थलों पर मास्क लगाने को फिलहाल अनिवार्य रखा गया है। इससे पहले चर्चा थी कि सरकार गुजरात में मास्क की अनिवार्यता को भी खत्म कर देगी। मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने गत दिनों गांधीनगर के गिफ्ट सिटी में आयोजित एक सरकारी समारोह में खुद इस बात का जिक्र किया था जिसके बाद से राज्य में मास्क की अनिवार्यता को खत्म करने की चर्चा शुरू हो गई थी। सरकार ने राज्य को कफ्र्यू मुक्त करने की घोषणा जरूर कर दी है लेकिन कोरोना महामारी एवं संक्रमण के केसों को देखते हुए फिलहाल मास्क तथा सामूहिक कार्यक्रमों में लोगों के एकत्र होने पर गाइडलाइन का पालन करने को आवश्यक माना है।

आलिया भट्ट ने वसूली मोटी रकम कैमियो के लिए अजय देवगन ने चार्ज किए इतने करोड़

नई दिल्ली। संजय लीला भंसाली की आने वाली निर्देशित फिल्म 'गंगूबाई काठियावाड़ी' आज सिनेमाघरों में दस्तक दे चुकी है। ट्रेलर के बाद से ही फिल्म में आलिया भट्ट के रोल को लेकर काफी चार्चा हो रही है। लोगों का मानना है कि ये आलिया भट्ट के करियर की सबसे चर्चित फिल्म है, इसके बाद उन्हें गंभीर अदाकाराओं में शुमार किया जाएगा। फिल्म की रिलीज काफी टाइम से टल रही थी, कोरोना के चलते इसे अब जाकर दर्शकों के बीच लाना संभव हुआ है। आलिया के अलावा फिल्म में अजय देवगन, हुमा कुरैशी, शांतनु माहेश्वरी, विजय राज जैसे दिग्गज एक्टर्स शामिल हैं। इन दमदार सितारों ने फिल्म के लिए मोटी रकम वसूल की है। तो आइए जानते हैं 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के लिए किस एकटर ने कितनी फीस ली है। बॉलीवुड लाइफ की रिपोर्ट की मानें तो 'गंगूबाई काठियावाड़ी' के हर कलाकार ने इसके लिए लाखों-करोड़ों में चार्ज किया है। अजय

देवगन फिल्म में कैमियो रोल प्ले कर रहे हैं। रहीम लाला के किरदार में अजय काफी इंप्रेस कर रहे है, फिल्म में इस स्पेशल अपीयरेंस के लिए उन्होंने 11 करोड़ चार्ज किए हैं। फिल्म में अनुभवी कलाकार विजय राज एक ट्रांसजेंडर रजियाबाई की चुनौतीपूर्ण भूमिका में दिखाई देंगे। ट्रेलर आने के बाद उनका किरदार काफी विवादों में भी रहा है। वहीं रिपोर्ट के अनुसार, उन्होंने फिल्म के लिए 1.50 करोड़ की फीस वसूली है। टेलीविजन के चॉकलेटी बॉय शांतनु माहेश्वरी बड़े पर्दे पर डेब्यू कर रहे हैं। फिल्म में वह गंगूबाई के साथ रोमांस करते नजर आएंगे और उन्होंने फिल्म के लिए 50 लाख चार्ज किए थे। दिग्गज एक्ट्रेस सीमा पाहवा भी सपोर्टिंग लीड में नजर आएंगी और रिपोर्ट्स के मुताबिक उन्होंने फिल्म के लिए 20 लाख फीस वसूली है। 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' की एक्ट्रेस एक विशेष भूमिका निभाती नजर आएंगी और रिपोर्ट्स के मुताबिक, हुमा कुरैशी ने फिल्म के लिए 2 करोड़ रुपये चार्ज किए हैं। कमाठीपुरा की क्वीन , गंगूबाई काठियावाड़ी प्रतिभाशाली आलिया भट्ट द्वारा निभाई गई है, और कथित तौर पर, उन्होंने फिल्म के लिए 20 करोड़ रुपये लिए हैं।

अनीता भाभी बनीं ये एक्ट्रेस बोल्ड तस्वीरों से मचा चुकीं है बवाल

नई दिल्ली। सिटकॉम 'भाबीजी घर पर हैं' पिछले 7 सालों से दर्शकों को गुदगुदा रहा है। इतने सालों में शो के कई कलाकार आए और गए। इस इस लिस्ट में अब अनिता भाभी यानि नेहा पेंडसे का नाम भी शामिल हो गया है। बीते

साल ही नेहा ने शो में इसी किरदार को निभाने वाली सौम्या टंडन को रिप्लेस किया था। बाद में नेहा की शो के मेकर्स के साथ कुछ अनबन हो गई, जिसके चलते उन्होंने शो को अलविदा कह दिया है। अब इस किरदार में आप हॉट और ग्लैमरस एक्ट्रेस विदिशा श्रीवास्तव को देखेंगे। भाबीजी घर पर हैं में मनमोहन तिवारी अब नई अनीता भाभी संग फ्लर्ट करते हुए नजर आएंगे। शो में अनीता भाभी के किरदार में विदिशा श्रीवास्तव नजर आने वाली हैं और उन्होंने इस रोल के लिए खुद को परफेक्ट बताया है। टाईम्स को दिए इंटरव्यू में विदिशा श्रीवास्तव ने कहा कि उनके लिए यह ना केवल अच्छा मौका है बल्कि एक बड़ा चैलेंज भी है। बता दें कि विदिशा श्रीवास्तव टीवी और साउथ फिल्म इंडस्ट्री में काफी एक्टिव हैं और अपनी बोल्ड तस्वीरों की वजह से वह पहले भी चर्चा बटोर चुकी हैं। विदिशा ने एकता कपूर के सुपरहिट सीरियल 'ये है मोहब्बतें' के जरिए टीवी की दुनिया में एंट्री मारी थी। आखिरी दफा उन्हें 'कहत हनुमान जय श्रीराम' में देखा गया था। एक्ट्रेस अपनी बोल्ड तस्वीरों के चलते सोशल मीडिया पर आग लगती रहती हैं। विदिशा श्रीवास्तव ने कहा, 'मेरा मानना है कि निर्माताओं ने इस किरदार के लिए कई एक्ट्रेसेस का ऑडिशन लिया होगा। लेकिन मुझे रातों-रात फाइनल कर दिया गया। मुझे लगता है कि मैं लुक और परफॉर्मेंस दोनों के मामले में इस रोल के लिए परफेक्ट हूं। भाभीजी घर पर हैं निश्चित रूप से मेरे करियर का एक महत्वपूर्ण मोड़ है और इसे मेरा अब तक का सबसे बड़ा ब्रेक कहा जा सकता है।' पिछले काफी समय से ये खबर आ रही थी कि नेहा पेंडसे इस सीरियल को छोड़ने वाली हैं। रिपोर्ट्स की माने तो उनका मेकर्स के साथ कुछ अच्छा नहीं चल रहा था। पर नेहा का कहना है कि शूटिंग के लिए आने में उन्हें काफी समय लगता था उनका घर बहुत दूर जिसके चलते उनकी सेहत पर भी असर पड़ रहा था। अब कारण जो भी हो लोगों को तो नई अनीता भाभी के जल्द ही दर्शन होने वाले हैं।

इस खतरनाक बीमारी से लड़ी कार्तिक आर्यन की मां माला तिवारी, वीडियो शेयर कर एक्टर ने लिखा, 'इस गाने की शूटिंग के दौरान

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्टर कार्तिक आर्यन फैंस के बीच अपनी चॉकलेटी पर्सनैलिटी के लिए जाने जाते हैं। अबतक कार्तिक ने कई फिल्मों और कई तरह के किरदार को पर्दे पर जिया है। एक्टिंग के साथ कार्तिक सोशल मीडिया पर भी काफी एक्टिव रहते हैं। वह अक्सर ही अपनी तस्वीरों और वीडियोज के साथ परिवार के साथ बिताए गए खास पलों को भी साझा करते रहते हैं। इसी बीच अब कार्तिक का एक वीडियो चर्चा में बना हुआ है जिसमें वह अपनी मां माला तिवारी के कैंसर की जंग को लेकर बात करते नजर आ रहे हैं। यहां देखें वीडियो कार्तिक आर्यन ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। इस वीडियो में वह अपनी मां माला तिवारी और कैंसर सर्वाइवर्स के साथ नजर आ रहे हैं। वीडियो में आप देख सकते हैं कि कर्तिक कैंसर संबधिति एक इवेंट में मां के साथ पहुंचे हैं। इस इवेंट में कार्तिक बतौर गेस्ट शामिल हुए थे। इस दौरान उन्होंने बताया कि उनकी मां को चार साल पहले ब्रेस्ट कैंसर हुआ था। हालांकि, वह इससे जंग जीत चुकी है। मां के कैंसर की जंग को लेकर बात करते हुए कार्तिक काफी भावुक हो गए थे। कुछ पलों के लिए उनसे बोला भी नहीं जा रहा था। इस दौरान वह अपनी मां और कैंसर सर्वाइवर्स के साथ डांस करते हुए भी नजर आ रहे हैं कार्तिक आर्यन ने इस वीडियो को शेयर करते हुए कैप्शन में लिखा, 'इन गानों की शूटिंग के दौरान कीमोथेरेपी सेशन में जाने से लेकर स्टेज पर डांस करने तक ये जर्नी काफी कठिन रही है। लेकिन इन सब के बावजूद उनकी पॉजिटिविटी, दृढ़ता और निडरता ने हमें आगे बढ़ने में मदद की। आज मैं गर्व से कह सकता हूं कि मेरी मां ने कैंसर से लड़ाई लड़ी और इस पर जीत हासिल की है। मुझे आप पर बहुत गर्व है मां। मैं उन सभी कैंसर सर्वाइवर्स को दिल से अपना सम्मान देता हूं जिन्होंने इस पर बीमारी को लड़ने में साहस दिखाया।'

अदा शर्मा ने बप्पी लाहरी के साथ शेयर की ऐसी तस्वीर, भड़के लोग बोले- 'शर्म आनी चाहिए आपको

नई दिल्ली। फिल्म इंडस्ट्री ने कुछ दिनों पहले ही अपने दिग्गज सिंगर,कंपोजर, डायरेक्टर बप्पी लहरी को खो दिया। इसका गम

अभी कुछ कम भी नहीं हुआ था कि लोगों की नजर एक एक्ट्रेस की पोस्ट पर पड़ी। और फिर क्या उसे जमकर ट्रोल किया गया। लोगों को एक्ट्रेस अदा शर्मा का इस तस्वीर शेयर करना बिल्कुल पसंद नहीं आया, उन्हें लगा कि अदा एक ऐसे कलाकार का मजाक उड़ा रहीं हैं जो इस संसार में है ही नहीं। दरअसल, हुआ ये कि 1920 फेम एक्ट्रेस अदा शर्मा ने अपनी फोटो के साथ बप्पी लहरी की तस्वीर का कोलाज बनाया। फोटो में बप्पी दा अपने चिरपरिचित अंदाज में जूलरी पहने दिख रहे हैं। वहीं अदा शर्मा ने भी कई सारी रिंग्स और चेन्स पहन रखी हैं। फोटो के साथ एक्ट्रेस ने पूछा कि किसने बेहतर पहना है अदा शर्मा पर भड़के सोशल मीडिया यूजर ने कमेंट सेक्शन में लिखा, आप पर धिक्कार है। एक अन्य यूजर ने कहा, 'सिर्फ 5 सेकेंड के फेम के लिए किसी लीजेंड से अपनी तुलना न करें।' तो दूसरे का कहना है कि , 'मौज मस्ती के लिए तुलना करना अलग बात है, लेकिन किसी के मरने के बाद तीसरे ने तो अदा को जमकर लताड़ी ही लगा दी, लिखा मैंने सोचा था कि केवल आपकी फिल्में ही कचरा है, लेकिन लगता है कि आपके पास और भी कचरा भरा हुआ है। वर्क फ्रंट की बात करें तो वह पिछली बार विद्युत जामवाल के साथ कमांडो 3 में नजर आई थीं। उन्होंने कुछ साउथ फिल्मों में भी काम किया है।

रूस-यूक्रेन युद्ध से चर्चा में आये 'चर्नोबिल डिजास्टर' को समझना है तो देख डालिए ये वेब सीरीज और फिल्म

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच चल रही जंग के बीच चर्नोबिल डिजास्टर एक बार फिर चर्चा में आ गयी है। वैसे तो अंतरराष्ट्रीय मामलों और इतिहास में दिलचस्पी रखने वाले लोग चर्नोबिल से भली-भांति परिचित होंगे, मगर सिनेमा के शौकीनों के लिए भी यह शब्द नया नहीं है। यूक्रेन के चनीबिल में 1986 का न्यूक्लियर डिजास्टर इतिहास की सबसे बड़ी मानवीय त्रासदियों में से एक माना जाता है। चर्नोबिल न्यूक्लियर पॉवर प्लांट के रिएक्टर नम्बर 4 में 26 अप्रैल 1986 को एक बड़ा हादसा हुआ था, जिससे निकले रेडिएशन का असर कई किलोमीटर तक हुआ था। एक दशक तक इसका असर बना रहा और कैंसर जैसी घातक बीमारियों की चपेट में बड़ी तादाद में लोग आये। भारतीय सिनेमा में तो डिजास्टर फिल्में बनाने का चलन अधिक नहीं रहा है।

अजीत की फिल्म 'वलीमाई' की स्क्रीनिंग पर थिएटर के बाहर फेंका पेट्रोल बम, एक घायल

नई दिल्ली। साउथ सुपरस्टार अजित कुमार-स्टारर फिल्म वलीमाई की स्क्रीनिंग के दौरान एक जबरदस्त हादसा हुआ। कोयंबटूर में सिनेमा हॉल के बाहर जमा भीड़ पर मोटरसाइकिल सवार गिरोह द्वारा पेट्रोल बम फेंकने से एक व्यक्ति घायल हो गया। ये घटना गुरुवार सुबह की है जब नवीन कुमार शहर के गांधीपुरम इलाके में थिएटर परिसर के सामने स्टार का फ्लेक्स बोर्ड लगा रहे थे। पुलिस ने कहा कि दोनों एक बाइक पर आए और भागने से पहले उस पर पेट्रोल बम फेंका। पुलिस ने बताया कि विस्फोट में नवीन को मामूली चोटें आई हैं, जिससे इलाके में तनाव का माहौल है। पुलिस को अपराध के पीछे मकसद के रूप में बैनर लगाने को लेकर एक्टर के फैंस के बीच पुरानी लड़ाई का संदेह है। घटना के बाद शहर के अन्य सिनेमाघरों के सामने सुरक्षा बढ़ा दी गई है। उन्होंने कहा कि जांच चल रही है। एच विनोथ द्वारा निर्देशित और बॉलीवुड अभिनेता हुमा

कुरैशी की स्टारर वलीमाई, गुरुवार को दुनिया भर में रिलीज हुई। फिल्म की रिलीज पहले ही होनी थी पर कोविड के कारण इसकी रिलीज अब हो पाई है। एक्शन-ड्रामा वलीमाई कोयंबटूर शहर में 20 से अधिक स्क्रीनों पर प्रदर्शित किया जा रहा है। वलीमाई में अजित एक पुलिस वाले की भूमिका निभा रहे हैं। प्रशंसक यह देखने के लिए उत्साहित है कि क्या उनका रोल पुलिस की भूमिकाओं से अलग है जो उन्होंने मनकथा और येन्नई अरिंथल में निभाई थी। एच विनोथ द्वारा अभिनीत फिल्म में अभिनेता हुमा कुरैशी कार्तिकेय गुम्माकोंडा और योगी बाबू भी शामिल है। फिल्म की स्टार कास्ट और क्रू में बर्स अभी भी विभिन्न शहरों में फिल्मों के प्रचार में व्यस्त हैं। इस फिल्म का निर्माण बोनी कपूर की प्रोडक्शन कंपनी के बैनर तले हुआ है। उम्मीद है कि यह बॉक्स ऑफिस पर कई रिकॉर्ड तोड़ देगी। वलीमाई की रिलीज़ को कोविद -19 महामारी के कारण कई बार स्थगित किया गया था और अब यह अंतः सिनेमाघरों में आ गई है।

रवि टंडन की तेरहवीं पर बेटी रवीना टंडन ने साझा किया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भेजा गया शोक पत्र

नई दिल्ली। हाल ही में एक्ट्रेस रवीना टंडन के पिता और फिल्म निर्देशक रवि टंडन ने 86 साल की उम्र में इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनके जाने से एक्ट्रेस और उनका पूरा परिवार बेहद ही गमगीन है। बीते गुरूवार को रवीना टंडन ने पिता की तेरहवीं पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भेजा गया शोक पत्र सोशल मीडिया पर साझा किया। रवीना ने अपने ट्विटर हैंडल और इंस्टाग्राम अकाउंट पर पीएम मोदी द्वारा अपने पिता की डेथ पर भेजे गए शोक पत्र की एक तस्वीर साझा की। पीएम मोदी द्वारा भेजे गए नोट में, उन्होंने दिवंगत फिल्म निर्माता की भारतीय सिनेमा में उनके योगदान के लिए प्रशंसा की। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि रवि टंडन ने अपनी रचनात्मकता और कौशल से भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया और उनका निधन कला जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। पत्र में पीएम मोदी ने यह भी कहा कि रवीना के सफल करियर में उनके पिता का प्रभाव साफ दिखाई देता है। नोट में लिखा है, ठआपके पिता आपके जीवन में एक बड़ा संबल और प्रेरणास्रोत थे। आपके व्यक्तित्व और कला के क्षेत्र में आपकी सफलता में उनके मार्गदर्शन और संस्कारों की झलक स्पष्ट दिखती है।

रवीना ने पत्र के लिए पीएम मोदी को धन्यवाद दिया और लिखा, सर नरेंद्र मोदी जी आपके दयालु शब्दों के लिए धन्यवाद वह बहुमुखी काम की विरासत को छोड़ कर गए हैं। वहीं ट्विटर पर नोट के साथ रवीना ने अपने पिता की कुछ पुरानी तस्वीरें भी शेयर की और लिखा ठआज पापा की तहरवी है 13वां दिन, वे कहते हैं, यह वह दिन है जब आत्मा अंत में सभी मोहों को छोड़कर अपने स्वर्गीय निवास में विश्राम करती है। उनके लिए प्यार और हमारे लिए समर्थन के लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करती हूं। एक सज्जन निर्देशक। वह थे और है। बता दें, वेटेरन फिल्ममेकर रवि टंडन का 11 फरवरी 2022 को निधन हो गया था। रिपोर्ट्स के अनुसार उनकी मृत्यु श्वसन संबंधी दिक्कतों के कारण हुई। रवि टंडन ने 'अनहोनी', 'खेल खेल में', 'मजबूर' और 'जिंदगी' सहित कई फिल्मों का निर्देशन किया था।

आज जहां हमले कर रहे हैं रूस के लड़ाकू विमान, वहीं हुई थीं के इस हिट गाने की शूटिंग

नई दिल्ली। एसएस राजामौली की फिल्म आरआरआर एक बड़े बजट की फिल्म है। इसे काफी इत्मिनान से फिलमाया गया है। जनवरी में सिनेमाघरों में आने वाली फिल्म की रिलीज डेट को कोरोना के चलते टाल दिया गया। फिल्म का यूक्रेन से भी खास कनेक्शन है। अब आप सोच रहे होंगे कि

रूस संग युद्ध में प्रवेश कर चुके यूक्रेन से भला आरआरआर का क्या कनेक्शन हो सकता है। वहां तो रूसी सेना लगातार हवाई हमले कर रही है। इन हमलों में यूक्रेन का काफी नुक्सान भी हुआ है।इस युद्ध ने जहां पूरे विश्व का ध्यान खींचा है वहीं लोग यूक्रेन में फंसे नागरिकों को अपनी दुआएं भेज रहे हैं। दरअसल, यूक्रेन भारतीय फिल्म मेकर्स का फेवरेट शूटिंग स्पॉट रहा है। फिल्म आरआरआर की टीम भी एक गाने की शूटिंग के लिए यूक्रेन गई थी। साल 2021 में कोरोना की दूसरी लहर के दौरान यूक्रेन की सरकार ने पर्यटकों के लिए अपने दरवाजे खोल दिए थे। वहां कोविड रिस्ट्रिक्शन भी इतने सख्त नहीं थे। इसी कारण एसएस राजामौली ने इस देश का रूख किया फिल्म का एक महत्वपूण गाना 'नाचो नाचो' यूक्रेन में शूट किया गया था। अगस्त 2021 में, निर्देशक एसएस राजामौली 'नाचो नाचो' गाने की शूटिंग के लिए 'आरआरआर' टीम को यूक्रेन ले गए। जूनियर एनटीआर, राम चरण और अन्य शूटिंग के लिए दो हफ्ते तक कीव में रहे। विजय टेलीविजन पर एक इंटरव्यू के दौरान, जूनियर एनटीआर ने शिकायत की कि उन्हें और राम चरण को कई दिनों तक इस गाने के हुक स्टेप का अभ्यास करना पड़ा। अरविंद समेथा ने मजाक में कहा कि एसएस राजामौली ने गाने की शूटिंग के दौरान उन दोनों को प्रताडित किया। बता दें कि निर्देशक एसएस राजामौली की 'आरआरआर' 2022 की मोस्ट अवेटेड फिल्मों में से एक है। जूनियर एनटीआर और राम चरण स्टारर, 'आरआरआर' 1920 के दशक की एक पीरियड फिल्म है। जहां जूनियर एनटीआर कोमाराम भीम की भूमिका निभा रहे हैं। वहीं, राम चरण अल्लूरी सीताराम राजू के रूप में दिखाई देंगे।

इस बार खतरनाक मिशन पर अरुणोदय सिंह, टीजर में कॉमेडी पंचेज के साथ एक्शन की हैवी डोज

नई दिल्ली। चर्चित वेब सीरीज अपहरण के दूसरे सीजन के साथ अरुणोदय सिंह एक बार फिर लौट रहे हैं। उत्तराखंड पुलिस में इंस्पेक्टर का किरदार निभा रहे अरुणोदय इस बार खतरनाक मिशन पर जाने वाले हैं। अपहरण 2 का टीजर गुरुवार को रिलीज कर दिया गया। टीजर में अरुणोदय का मिजाज और अंदाज दिलचस्प नजर आ रहा है। टीजर की शुरुआत अरुणोदय के किरदार से होती है। दृश्य आगे बढ़ते हैं और पता चलता है कि इस बार कहानी बेलग्रेड में पहुंच गयी है। अरुणोदय को एक ऐसे शख्स की तलाश में भेजा जाता है, जो देश पर कोई बड़ा अटैक करने वाला है

और उसका चेहरा किसी ने नहीं देखा है। अरुणोदय अपने सीनियर से कहते हैं कि जिस आदमी को पकड़ने के लिए पूरी आर्मी भेजनी चाहिए, उसको पकड़ने जाएंगे हम। ऐसे कामों के लिए पूरे हिंदुस्तान में हमी एक मिले थे आपको। अपहरण का पहला सीजन 2018 में ऑल्ट बालाजी पर रिलीज किया गया था। यह सीजन हिट रहा था। इसका निर्देशन सिद्धार्थ सेनगुप्ता ने किया था। अरुणोदय सीरीज में उत्तराखंड पुलिस के इंस्पेक्टर रूद्र श्रीवास्तव का किरदार निभाते हैं। पहले सीजन में माही गिल, निधि सिंह, वरुण बडोला, सानंद वर्मी ने अहम किरदार निभाये थे। निधि सिंह, सानंद और सनेहिल दीक्षित मेहरा दूसरे सीजन का भी हिस्सा हैं। अरुणोदय इससे पहले नेटफ्लिक्स की सीरीज यह काली-काली आंखें में भी नजर आये थे, जिसमें उन्होंने किडनैपर का किरदार निभाया था।

संजीदा शेख ने 'पुष्पाः द राइज' फिल्म के गाने पर कराया बोल्ड फोटोशूट

नई दिल्ली। संजीदा शेख ने पुष्पाः द राइज फिल्म के गाने पर एक बोल्ड फोटोशूट का वीडियो शेयर किया है इसमें वह कुर्सी पर बैठकर बोल्ड पोज देती नजर आ रही है हालांकि उनका ध्यान भटकने पर वह हंसने लगती है वीडियो में उनके बाल खुले हुए हैं और उन्होंने मेकअप कर रखा है उन्होंने थाई हाई स्लिट गाउन पहन रखा है उनकी खूबसूरत टांगे भी नजर आ रही है उन्होंने हाई हील्स पहन रखी हैं और वह बोल्ड पोज देती हुई नजर आ रही हैं संजीदा शेख का बोल्ड वीडियो इंस्टाग्राम पर वायरल हो गया है इसे 6 घंटे में 14000 से ज्यादा लाइक्स मिले हैं वहीं इसपर 150 कमेंट किए गए हैं कई लोगों ने इसपर दिल और आग की इमोजी भी शेयर की है वहीं कई लोगों ने हॉट, ब्यूटीफुल, खूबसूरत, अमेजिंग और नाइस जैसे कमेंट किए हैं संजीदा शेख टीवी एक्ट्रेस है उन्होंने कई टेलीविजन शो में काम किया है इसके अलावा वह सोशल मीडिया पर भी काफी सक्रिय हैं संजीदा शेख के इंस्टाग्राम पर 44 लाख फॉलोअर्स है वह अक्सर अपने फैंस से बातचीत करती हैं इसके चलते उनके फैंस भी काफी उत्साहित रहते हैं। संजीदा शेख सोशल मीडिया पर अक्सर अपनी हॉट और बोल्ड तस्वीरें और वीडियो शेयर करती हैं ।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।